साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : यह सप्ताह कुछ संघर्षपूर्ण-सा प्रतीत होगा, परिश्रम का फल पूरा न मिलेगा, काम भी रुक-रुककर हो बनेंगे, फिर भी कारोबार से लाभ होता रहेगा, आर्थिक समस्या भी दूर होती महसूस होगी।

वृष : इन दिनों शुभ अशुभ मिश्रितफलों की प्राप्ति होती रहेगी, लाभ अच्छा परन्तु व्यय भी कम न होगा, शत्रु परास्त फिर भी विरोधी पक्ष से सावधान रहें, कामधन्धा प्रायः पहले जैसा ही।

मिथुन : नए कार्यों से हानि तो नहीं होगी परन्तु लाभ भी आशा अनुसार न हो पाएगा, स्थायी काम-धन्धों में उन्नति, आर्थिक लाभ भी बढ़ेगा, गृह कलह से परेशानी एवं गुस्सा भी रहेगा, रुका पैसा मिलने लगेगा।

कर्क : भाग्य सहारा देगा, अशुभ फलों में कमी होकर शुभ फलों का संचार होने लगेगा, रोजगार-काम-धंधों में दृढ़ता आएगी, कभी-कभी घरेलू उलझनों मे दिल उदास रहा करेगा, शत्रु परास्त होंगे।

सिंह : इन दिनों शुभ-अशुभ मिश्रित फल मिलते रहेंगे, यात्रा अचानक ही करनी पड़ेगी, गृह-कलह के कारण चित उदास, काम-धन्धा पहले जैसा ही और लाभ भी होता रहेगा, कोई बिगड़ा काम बन जाएगा।

कन्या : अच्छे लोगों के परामर्श से काम करें और जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न लें तो अच्छा रहेगा, सप्ताह दिलचस्प भी है और संघर्षमय भी, घरेलू हालात सुधरेंगे, आर्थिक क्षेत्र में भी दृढ़ता होगी।

तुला : सप्ताह अच्छा है परन्तु व्यर्थ की परेशानियों के कारण स्वभाव में कुछ तेजी रहेगी, जल्दबाजी से काम लेना ठीक नहीं, आर्थिक परेशानी दूर होगी, नई वस्तुओं की खरीद, मशीनरी आदि पर व्यय।

वृश्चिक : स्थायी कामधन्धों में उन्नति एवं सुधार होता भी महसूस होगा, परन्तु व्यर्थ के झंझटों में आप अधिक घिरे रहोगे, भाग्य सहारा से अभीष्ट कार्य सिद्ध हो सकेंगे, आय आशा अनुसार, व्यय अधिक।

धनु : इस उप्ताह आपको संघर्ष काफी करना पड़ेगा परन्तु अशुभ फलों की कमी होने लगेगी और शुभ फलों में वृद्धि होती जावेगी, लाभ अच्छा होगा, व्यय यथार्थ, आर्थिक क्षेत्र में भी विकास होने लगेगा।

मकर : सप्ताह संघर्षपूर्ण होने के साथ-साथ दिलचस्प भी रहेगा, सरकारी कामों में सफलता, धन व्यय एवं वैर-विरोध होने से परेशानी, बने कामों में पुनः बाधा, फिर भी भाग्य सहारा देगा।

कुम्भ : रोजगार-कामधन्धों की आशाएं बढ़ेंगी. कुछ विशेष परिवर्तन होंगे या करने भी पड़ सकते हैं, यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी, हालात परिश्रम करने पर पहले से ठीक चल पड़ेंगे।

मीन : सप्ताह दिलचस्प रहेगा परन्तु इन दिनों सफलता प्राप्त करने के लिए आपको बार-बार प्रयत्न एवं संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, यात्रा सावधानी से करें, शत्रुओं को मुंह की खानी पड़ेगी।

मैं पहले दीवाना नहीं पढ़ता था मगर, नया अंक देखते ही मुझे खुशी हुई। मैंने पहला अंक पढ़ा तो वह बहुत लाभप्रद था। मोटू-पतलू, फैन्टम, सिलबिल - पिलपिल बहुत अच्छे लगे और मैं व्यंग चित्रों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं तथा, दीवाना का वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूं। मुझे दीवाना के पुराने अंक चाहियें।

मुकेश कुमार मारवीजा—आगरा

सदस्य बनने और पुराने अंक प्राप्त करने के लिए हमारे सरकुलेशन विभाग से संपर्क कीजिए। —सं०

मैं दीवाना का पुराना पाठक हूं। पिछले कुछ अंक पढ़कर बहुत ही खुशी हुई, दीवाना दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। अंक २७ में मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, मदहोश, सवाल यह है और हमारी माँगे पूरी करो बहुत पसन्द आये। 'विश्वरमन निर्मल' की कहानी हमदर्द प्रेत बहुत ही अच्छी लगी। विश्वरमन की ही कहानी मियाँ टंकीमल भी बहुत अच्छी लगी। हमारी शुभ कामना है कि दीवाना हमें जीवन भर दीवाना बनाता रहे।

सुरजीत सिंह लम्बा—फरीदाबाद

दीवाना का अंक २५ मिला। पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। इसमें लेखिका 'संगीता' द्वारा लिखा गया 'ठोकर' उपन्यास एवम् 'विचित्र टोपी' कहानी बहुत पसन्द आई तथा पत्रिका में दिये हुए कार्टून भी बहुत पसन्द आये। अब हम आशा करते हैं कि दीवाना का हर अंक इतना ही चटपटा होगा जितना अभी है। **झब्बर सिंह—इन्दौर**

दीवाना का अंक २७ मिला, पढ़कर मुरझा चेहरा हंसी से खिल उठा। इस अंक में सबसे अच्छे स्तम्भ 'उनसे मिलिये' व 'सवाल यह है' थे। मोटू-पतलू व पिलपिल-सिलबिल ने निराश किया। 'गरीब चन्द की डाक' बिलकुल बकवास लगा। आपस की बातें व इस स्तम्भ में क्या अन्तर है? इस स्तम्भ की जगह कोई नया रोचक स्तम्भ शुरु करने का मैं सुझाव देता हूँ। इस अंक में चिल्ली का पत्र भी न पाकर दुख हुआ। बाकी सब स्तम्भ बहुत अच्छे लगे। प्रतियोगिताओं में इनाम की राशि बहुत थोड़ी है। कई विजेता होने पर तो डाक खर्च प्राप्त होता है। 'क्यों और कैसे' स्तम्भ बहुत पसंद आता है। **संजय गोयल—आगरा**

दीवाना का नया अंक मिला, इस अंक के बढ़े हुए आकार, आकर्षक छपाई से प्रभावित हुए बिना न रह सका। इस अंक में पंचतन्त्र, टी० वी० पैरोडियाँ, जनता कांग्रेस, याद आई बरसात में उनकी, स्काई-लैब अगर यहां गिरता फीचरों ने हंसा-हंसा कर पूरा दीवाना, ही बना डाला। पढ़ते-पढ़ते दीवाना के दीवाने हो गए हम, पहले थे हम बच्चे, अब स्याने हो गये हम। पर बात यह है कि पढ़ना छुटता नहीं छुड़ाए, हर बार चिल्ली हमको, करतब नए दिखाए, अब हाल है ये कि कालेज को जा रहे हैं। लेकिन स्टाल से दीवाना पढते जा रहे हैं।

रमेश कुमार—जनोली

'दीवाना' का अंक नम्बर २८ मिला। आगे से बड़े आकार में दीवाना देख बेहद खुशी हुई। आप ने भी वही बात दोहरा दी कि कुत्ते की दुम बारह साल नली में रही निकली फिर भी टेढ़ी। यानि कि कुछ सालों के बाद दीवाना भी नली में से निकल आई है अपने पहले वाले आकार में। इसके साथ बस यही लिखूंगा कि हर बार की तरह ये अंक इस बार भी बेहद पसन्द आया।

भूपेन्द्र देवगुन—अन्धा मुगल

मुख पृष्ठ पर

नेता बैठा कुर्सी पर
चेहरा उसका उदास
लाख दिखाया उसको
पर कोई न आया रास।
कोई न आया रास
हंसायें अब इसको कैसे
मुखड़ा एकदम खिल उठा
वोट दिखाया जब ऐसे॥

अंक : ३४, वर्ष : १५
१ दिसम्बर १९७९

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु० वार्षिकः ४८ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

परोपकारी

बात-बे-बात की

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ !
2
3 4
4
6 ?
6
9 12
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : १४-१२-१९८६
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो :
"Fun with Gems", Dept. No. E-33
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
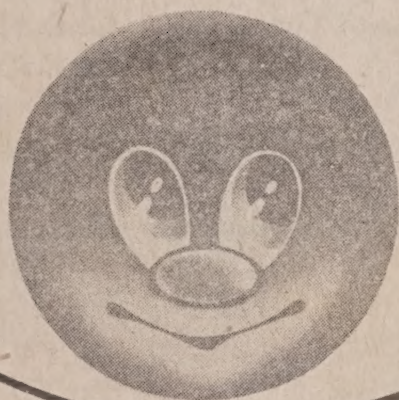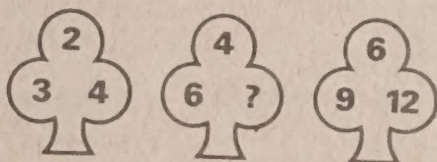
चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर (म० प्र०)
प्र० : कभी-कभी दिल की बात होठों पर आकर क्यों रुक जाती है ?
उ० : बात उठें मस्तिष्क में, ऊट-पटांग अनेक ।
होठों पर आए तभी, लगे अक्ल का ब्रेक ॥

विजय मासूम, राजघाट, वाराणसी
प्र० : शराब, सुन्दरी और पैसा में सबसे खतरनाक कौन है ?
उ० : भाग्य-भोग जिसका प्रबल, उसका क्या है खोट ।
हाजिर रहते हर समय, सुरा-सुन्दरी-नोट ॥

लौकी प्रकाश केवल, काशीपुर
प्र० : चुनाव के समय नेताओं के वादों में वोटर क्यों फंस जाते हैं ?
उ० : मीटिंगों में बोलते, मीठा-मीठा झूठ ।
कूटनीति की चाल से, लें जनता को लूट ॥

मुरलीधर बतरा, इन्दौर
प्र० : आप हमें मरने के बाद स्वर्ग में भेजेंगे या नर्क में ?
उ० : जल्दी क्यों कर रहे प्रिय मुर्लीधर बेकार ।
पहुंचेंगे हम जहाँ पर, दे दें तुमको तार ॥

माणिक श्रेष्ठ अनजान, नेपाल
प्र० : काका हमारे मामले पर कीजिए कुछ गौर ।
हालत खराब हो गई शादी के बाद और ॥
उ० : श्रेष्ठ हालात चाहते तो काम इतना कीजिए ।
हो अधिक औलाद तो, नसबंदी करवा लीजिए ॥

श्याम कुमार गुप्ता, भुनेशवर, गिरिडीह
प्र० : हुस्न अगर इश्क से टकरा जाए तो ?
उ० : ऐसे एक्सीडेंट में दोनों भरते आह ।
सबसे सरल उपाय है, कर लें प्रेम-विवाह ॥

गुलशन कुमार, बेंडगेट, सिरसा
प्र० : जनता (एस) के राज्य में भी हमको धक्के खाने पड़ रहे हैं, क्या करें ?
उ० : वर्तमान सरकार की भी डगमग है नाव ।
'मत पेटी' में डालना अपने दिल के भाव ॥

अनूपदत्त शर्मा, तपकरा (म० प्र०)
प्र० : मेरी प्रेमिका मेरा फोटो चाहती है, भेज दूं क्या ?
उ० : साफ कराकर भेजिए चेहरे के सब दोष ।
सुन्दर फोटो देखकर, हो जाए बेहोश ॥

जगदीश लूथरा, चन्द्रनगर, दिल्ली-५७
प्र० : आपका नाम काका है, क्या आप दूध पोते बच्चे हैं ?
उ० : बच्चे शीशी के पिएं बूढ़े भरें गिलास ।
युवक घड़ा भर-भर पिएं, तब भी बुझे न प्यास ॥

बबिता कौशल, हाथरस
प्र० : इन्दिरा गांधी, जगजीवनराम और चरणसिंह; इनमें से कौन प्रधान मंत्री बनना चाहिए ?
उ० : बाबू जी औ इन्दिरा, चरणसिंह श्रीमान ।
लड़ें एक ही क्षेत्र से जीते वही प्रधान ॥

भोज 'खामोश', मंडी गिदड़बाहा
प्र० : भगवान और इन्सान में क्या अन्तर है काका ?
उ० : मंत्री-वोटर में दिखे तुमको जितना फर्क ।
ईश्वर औ इन्सान में, समझो उतना फर्क ॥

जलील हवारी, गइवावीरगंज (नेपाल)
प्र० : क्या दुखों का साया हर इन्सान को घेरता है ?
उ० : साथ-साथ सुख-दुख चलें, लाभ और नुकसान ।
सर्वसुखी पाया नहीं, कोई भी इन्सान ।

डा० सतीशचन्द्र जैन, सुदर्शी, जबेरा (म० प्र०)
प्र० : काका के कारतूस चुनावों में क्या चमत्कार दिखाएंगे ?
उ० : कारतूस, मतदाताओं पर जादू यह कर दें ।
प्रधान मंत्री की कुर्सी पर 'काकी' को धर दें ॥

पवन खत्री, बैरागी इंदौर
प्र० : चरनसिंह प्रधान मंत्री कब तक बने रहेंगे ?
उ० : मध्यावधि चुनाव का दंगल जब तक होय ॥
जमे रहेंगे तब तलक, हटा सके नहीं कोय ॥

शमीम अहमद, रांची (बिहार)
प्र० : मौत भी आती नहीं, उम्मीद भी जाती नहीं ।
दिल को यह क्या हो गया, कोई भी शै भाती नहीं ॥
उ० : ना उम्मीदी छोड़कर, कुछ काम लीजे सब्र से ।
जब कोई कुर्सी मिले, आ जाना उठकर कब्र से ॥

अतुल सक्सेना, शिकारपुर (बुलन्दशहर)
प्र० : काकी जी का मूल्य और काका की फीस क्या है ?
उ० : काकी जी के मूल्य को, जानें उनकी सास ।
काका कवि की फ़ीस है, हास्य-व्यंग्य-परिहास ॥

नारायण वाववानी, गोलबाजार, रायपुर
प्र० : पंडितों की मंडली में मूर्ख की क्या पहचान है ?
उ० : मूरख विद्वज्जनों के सुनकर तर्क-वितर्क ।
बैठा रहता चुप्प या, करता रहे कुतर्क ॥

रोशन त्यागी, इंदौर (म० प्र०)
प्र० : दोस्ती क्या समझकर करनी चाहिए ?
उ० : लल्लू पल्लू छोड़कर उसे बनाओ यार ।
घर वाली हो सुन्दरी, निज की कोठी कार ॥

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम २० रु.
कैमल-तीसरा इनाम १० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ३१-१२-१९७९

CONTEST NO.12

VISION

मोटू पतलू

राष्ट्रपति ने नये चुनाव कराने का आदेश दिया और बड़े-बड़े नेता बरसाती मेंढ़कों की तरह नारे लगाने लगे तो मोटू-पतलू ने भी देश सेवा के लिये अपने सब साथियों को जमा करके एक नई राजनीतिक पार्टी बना ली और सभी विचारों के लोगों को पार्टी का सदस्य बनाने के लिये उसका नाम रखा, "जनता आर० एस० एस० सोशलिस्ट कांग्रेस पार्टी।" मोटू ने खुद ही अपने आपको पार्टी का प्रधान बना लिया है, इस पार्टी ने जोर शोर से अपनी इलैक्शन कम्पेन शुरू कर दी है। आइये, अब इनकी देश सेवा का आंखों देखा हाल देखिये।

और हमारी हर बात मानने का कायदा भी तुम करते हो ।

आपका हर हुक्म मेरे सर माथे पर ।

तुम्हें मोटू-पतलू का बेड़ा गर्क करना है । वे तुम्हारे मित्र हैं । मित्र की पीठ पर छुरा घोंपते तुम्हें शर्म तो नहीं आएगी ?
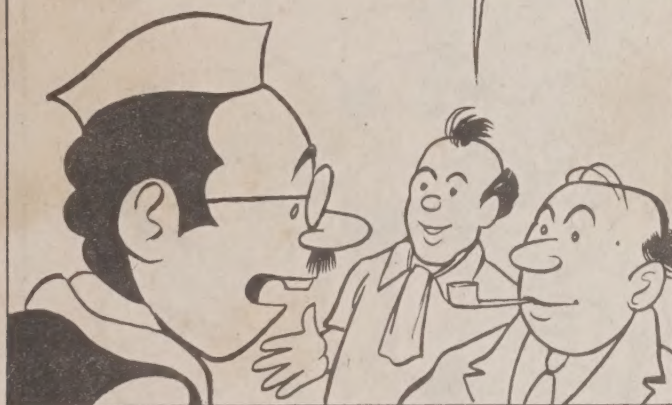
अजी यह तो राजनीति है ! इसमें शर्म कैसी ? अपने मतलब के लिए तो मैं तुम्हारी और अपनी पीठ में भी छुरा घोंप सकता है ।

चलो बात तो हुई । अब तुम देखना कैसे-कैसे नये दाव-पेंच सिखा कर हम तुम्हें प्रधान मंत्री बनाते हैं । अभी तुम आर.एस.एस. सोशलिस्ट कांग्रेस में रह कर अन्दर ही अन्दर तोड़-फोड़ करते रहो । पार्टी की जड़ें काटो और उसे खोखला कर दो । पार्टी तोड़ने और देश की एकता का सत्यानाश करने के लिए हम तुम्हें समय-समय पर आदेश देते रहेंगे ।

इसके बाद घसीटा राम ने पार्टी की हर मीटिंग में तोड़-फोड़ शुरू कर दी ।

मेरे विचार में हम अपने चुनाव मैनिफेस्टो में कम से कम नारे लगायें और जनता से जो वायदे करें। उन्हें पूरे करके दिखा दें ।

वायदे पूरा करने के लिए नहीं, केवल नारे लगाने के लिए होते हैं । हमारी जनता को नारों से पेट भरने की आदत पड़ गई है ।
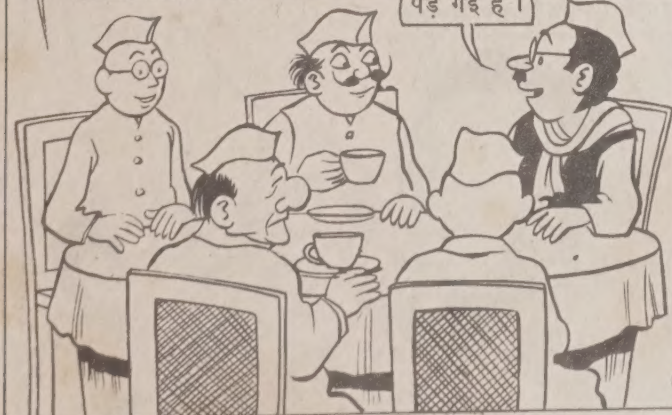
झूठे नारे न लगाये गये, तो यह ऐसी ही बात होगी जैसे किसी भूखे के सामने खाली पत्तल सरका दी जाये और उस पर हलवा तो क्या सूखी रोटी रखने का दिलासा भी न दिया जाये ।

तुम कहना क्या चाहते हो ?

एक सीधी सी बात । भूखे से कहिये कि उसे चांदी के कटोरे में खीर दी जाएगी । थाली में पूरी-कचौरी, मटर, पनीर, मखाने का पुलाव और दही बड़े होंगे ।
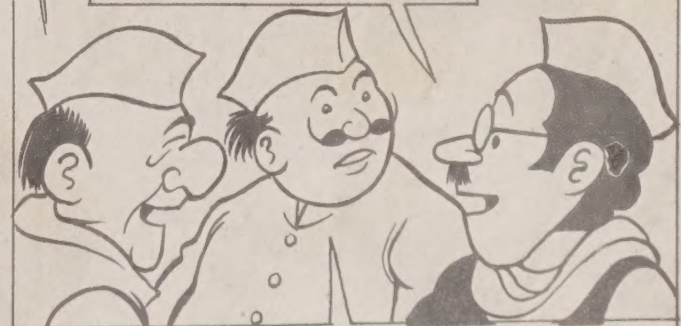
नारे तो यह लगा दें । फिर चाहे पत्तल पर सूखी रोटी भी न दे पायें

तुम पार्टी को गलत रास्ते पर ले जाने की कोशिश कर रहे हो !
मैं पार्टी को सही दिशा दे रहा हूं ।–हमारे गरीब लोगों को ऐसे सुनहरी ख्वाब देखने में बहुत मजा आता है । जैसे वे सिनेमा के पर्दे पर जीनत अमान की पतली कमर देख कर खुश होते हैं । छू कर देखेंगे तो हाथ कुछ नहीं आता क्योंकि वह केवल एक परछाई है । बात यह नहीं है कि हाथ क्या आता है ? असल बात यह है कि ख्यालों के परदे पर क्या देखने में मजा आता है ।
हम बड़े-बड़े नारे लगायेंगे । लोगों से कहेंगे हमारी पार्टी इलैक्शन जीतने के बाद हर आदमी को एक-एक कार देगी, एक-एक बंगला देगी । गरीबी और अमीरी का फर्क मिटाने के लिए हर आदमी को एक-एक अशोका होटल देगी । हर आदमी के घर तक रेल की पटरी बिछायेगी और हर आदमी को एक एक रेलगाड़ी देगी ।
दिमाग खराब हो गया है इसका । उल्टी पट्टी पढ़ा रहा है ।
लगता है किसी विदेशी ताकत का एजेंट है ।
लोगों को भड़का कर यह तो पार्टी का सत्यानाश कर देगा ।
चलो इस झगड़े में पड़ने से पहले हमें दूसरी पार्टियों के बड़े बड़े नेताओं से मिल कर उन्हें अपनी पार्टी जनता आर० एस० एस० सोशलिस्ट कांग्रेस में लाने की कोशिश करनी चाहिए ।
जनता, लोक दल, सी० एफ०डी०, कांग्रेस अर्स और कांग्रेस आई० के लोकप्रिय नेता हमारी पार्टी में सम्मिलित हो गये तो देश की नैया पार हो जायेगी ।
पर अन्त में उस नैया में घसीटाराम ही बचेगा ।
सबसे पहले यह लोग चन्द्रशेखर की कोठी पर पहुंचे ।
हम आपसे निवेदन करने आये हैं कि आप जनता पार्टी छोड़ कर हमारी पार्टी में आ जाइये ।
इसके बारे में मुझे कुछ सोचना होगा ।
सोचेगा वह जिसके पास दिमाग हो । आज हर आदमी कह रहा है कि जनता पार्टी वाले यदि दिमाग से काम लेते तो उनकी पार्टी इतनी बुरी तरह न टूटती। मतलब है दिमाग होता, तभी तो सोचते ।
क्या कह रहा है घसीटाराम ! दिमाग से काम ले !
दिमाग हो तो दिमाग से काम ले !!
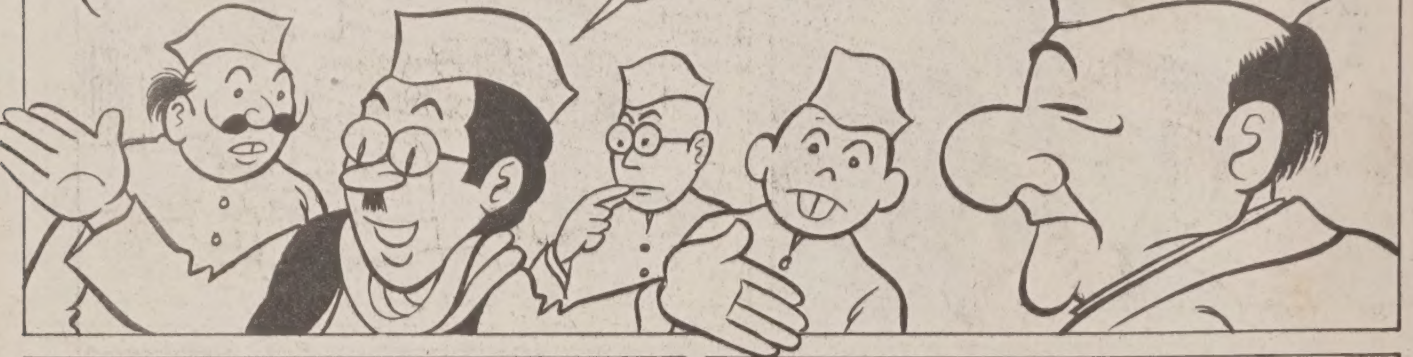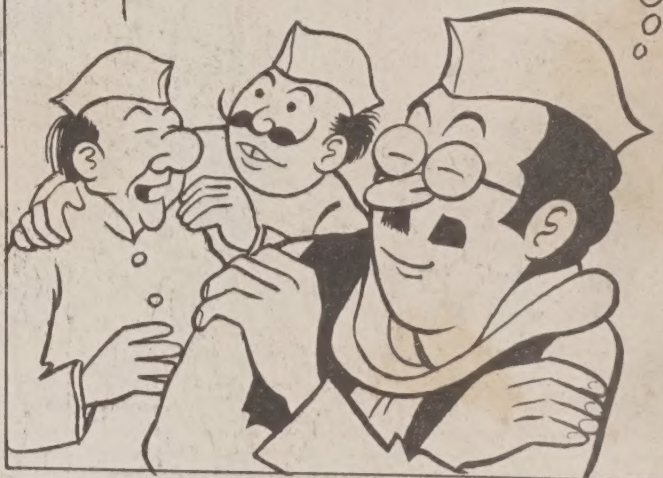
इसके बाद लोग मोरार जी देसाई के पास पहुंचे तो…

बड़े खेद की बात है कि खुद अपनी पार्टी वालों ने आपको ऊंची गद्दी से उतार कर धरती पर पटक दिया । और ऐसे दूध में से मक्खी की तरह निकाला कि आपको राजनीति से संन्यास लेने का ऐलान करना पड़ा । इस बात पर हंगामा मचा दिया कि जैगवार हवाई जहाज की खरीद दारी में आप और बाबू जी कितना खा गये । सरकारी सोना बेचा तो उससे कितनी जेबें भरीं । सच पूछो तो जेबें होती ही भरने के लिये हैं । वर्ना टेलर मास्टरों का क्या दिमाग खराब था जो उन्होंने कपड़ों में जेबें लगाने का फैशन चलाया ।
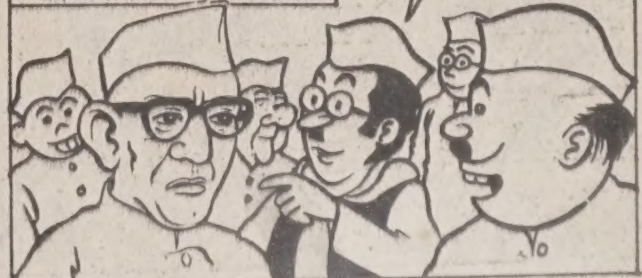
आप हमारी पार्टी में आ जाइये देसाई भाई जी । हम कान्ति देसाई की इन्कम टैक्स के फाइलों की जांच करवाने की मांग करने वालों पर कमीशन बिठा कर उन्हें रगड़वा देंगे, जैसे ऊंट अपने दुश्मन पर बैठ कर उसे रगड़ता है ।
आपने यह तो बार-बार कहा है कि मनुष्य को क्या पीना चाहिये, अब हमारी इलैक्शन कम्पेन में यह और बता देना कि भूखी जनता खाये क्या ?
मेरे पास समय नहीं है तुम्हारी बकवास सुनने के लिए, चले जाओ यहां से ।

बात बन जाती । पर घसीटा राम ने बीच-बीच में टोक कर काम खराब कर दिया ।
बात बनती कैसे ? मोरार जी देसाई के बड़े कानों से बात ऐसे निकल जाती है जैसे इण्डिया गेट के बीच में से कबूतर निकल जाता है ।
चलो बाजपेई की कोठी पर चलो ।

अटल बिहारी बाजपेई हमारी पार्टी में आ गये तो हमारा झंडा ऊंचा हो जाएगा ।
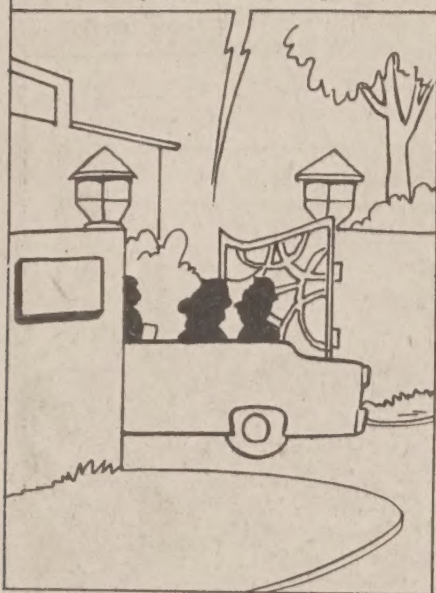
हम यह आशा लेकर आये हैं बाजपेई जी कि आप हमारी पार्टी में आ जायें ।
हमारी पार्टी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि हम मोरार जी देसाई की तरह शराब न पीने का ढिंडोरा नहीं पीटते जिनके कैबनेट के अधिकतर मन्त्री शराब पीते थे ।

हम तो कहते हैं हम मंत्री चाहे जितनी शराब पीयें भंग पीयें···।
अफीम खायें और फिर तेल पीलें···!
विदेश मंत्री विदेशों में ही रहें । कभी अपने देश में टिकें भी तो बस एक दो दिन के लिए ।
जैसे कि यदि आप आज विदेश मंत्री होते तो राजस्थान में हुई सूखे की भयंकर तबाहकारी का पता लगाने के लिए अमरीका पहुंच जाते ।
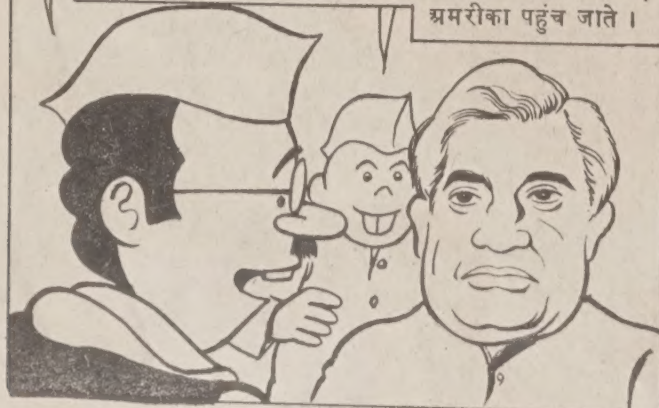
फिर भारत आते तो अशोका होटल के एयरकंडीशंड कन्वेशन हाल में एक कांफ्रेंस बुलाकर यह ऐलान करते कि राजस्थान के सूखा पीडितों की हालत देखकर आप को कितना दुःख हुआ है ।
मैं सब समझ रहा हूं तुम्हारी बातें ।
तुम यहां से दफा हो रहे हो या तुम्हें धक्के मार कर बाहर निकालूं ?

अर्स कांग्रेस के आफिस में

माई डीयर अर्स ! बहुत होली बस। अपनी पार्टी को छोड़ कर आप हमारी पार्टी में आ जाइए।

हमारी कांग्रेस हमारे लिए ऐसे है जैसे मां के लिए उसका बच्चा होता है।

पर यह बंदरिया का मरा हुआ बच्चा है। इसे आप कब तक अपनी छाती से चिपटाये रहेंगे?

कांग्रेस को बंदरिया का मरा हुआ बच्चा कह रहे हो? अपना मुंह काला करो यहां से दफा होकर।

इसके बाद यह लोग राजनारायण और चौधरी चरणसिंह से मिले।
कोई अक्ल वाला हमारी पार्टी में नहीं आया। अब आप आ जाइये।
इसका मतलब है मैं क्या तुम्हें बे-अक्ल वाला लगता हूं ?
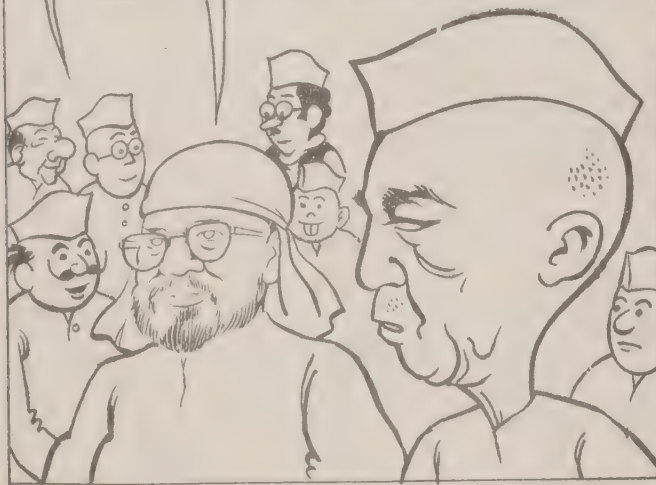
कह कह कर तो चौधरी साहब ही आपको झिड़क सकते हैं। हम तो यह प्रार्थना ही कर सकते है कि आपके साथ-साथ चौधरी साहब भी हमारी पार्टी में आ जाएँ। राज नारायण जी पहले अंदर ही अंदर अपनी लोकदल पार्टी की जड़ें काटें फिर कुछ साथियों को लेकर पार्टी से बाहर हो जायें और जब चौधरी साहब देखें कि जिस थाली में आप खाते थे उसमें आप ने पूरी तरह छेद कर दिये हैं तो
वह भी पार्टी को छोड़ दें।
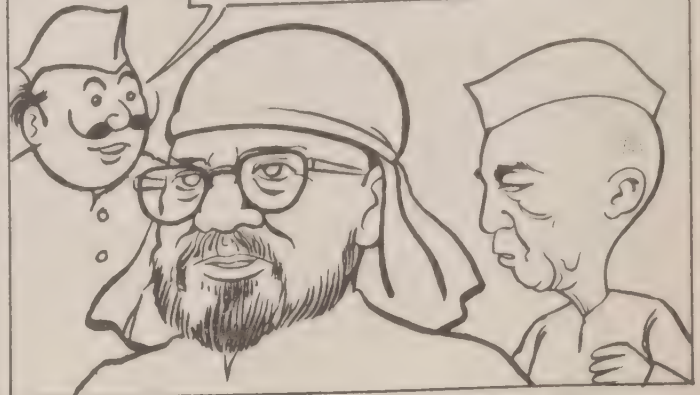
वास्तव में हमारी पार्टी में आप के लिए बहुत काम हैं। देश में सूखा पड़ा है और आप ने सूखा पीडितों को राहत पहुंचाने के लिए अब तक उन पर इतर नहीं छिड़का है। फिल्म स्टार आई० एस० जौहर ने भी अब तक आप पर मिट्टी का तेल नहीं छिड़का है। इस काम के लिए हम जौहर का भी अपनी पार्टी में मिला रहे हैं।
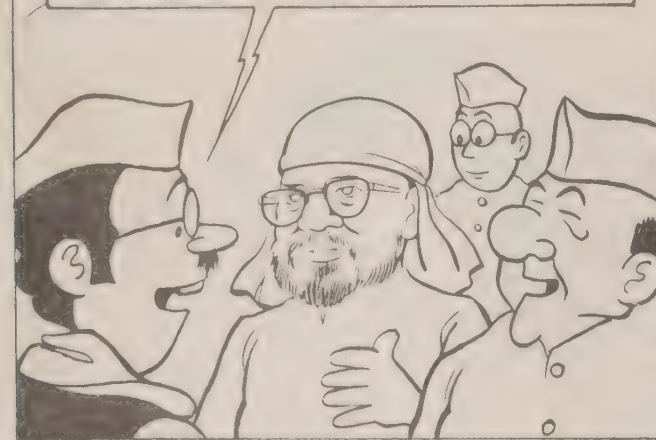
चौधरी साहब के लिए हमारी पार्टी में बहुत काम हैं। यह सूखा पीड़ित लोगों की हालत पर विचार करने के लिए अपने साथी नेताओं को डिनर पर बुला सकते हैं। सूखा पीड़ितों की सहायता के लिए वहां ब्यूटि कम्पिटीशन का सुझाव दे सकते हैं। वहां भारत और वैस्टइंडीज के बीच टैस्ट मैच करवाने का आर्डिनेंस जारी करवा सकते हैं। सत्तर लाख रुपये की थैली से रीयल सूखा इंडिया नाम का अखबार निकाल सकते हैं।

पता नहीं क्या कह रहे हो, हमारी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है। हमारा तो एक वसूल है। हम तुम्हारी पार्टी में मिल भी जायें, तो तुम्हें हमारा एक असूल मानना होगा वह वसूल है, एक पार्टी, एक नाम, एक नारा, एक झंडा, एक चुनाव निशान और एक चौधरी।
एक चौधरी ?
हां एक चौधरी ! मतलब है एक प्रधानमंत्री,
मतलब है एक प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह।
यह धांधली नहीं चलेगी। प्रधानमंत्री बनने की कसम तो मैने खाई है।
इसका मतलब है कसम खाई है और जूता खाना अभी बाकी है।
प्रधान मंत्री मैं बनूंगा।
नहीं, प्रधान मंत्री मैं बनूंगा।

मुझे तो हकीम जी नुस्खे में लिख कर मर गये हैं कि प्रधान मंत्री मुझे बनना है।
दिमाग गराब हो गया है तुम्हारा। चौधरी साहब के सामने तो 'मरी हुई बन्दरिया कांग्रेस' का भी कोई नेता नहीं बोला। प्रधानमंत्री चौधरी साहब ही बनेंगे।
मैं देख लूँगा एक-एक को, देश का बच्चा-बच्चा मुझे प्रधान मंत्री बनाने के लिए वोट देगा।
बच्चों को तो वोट डालने का अधिकार ही नहीं।
देश में शांति बनाये रखने के लिए मेरा प्रधान मंत्री बनना जरूरी है।
अब तक मोटू-पतलू के दूसरे समर्थक और अन्य पार्टियों के नेता भी वहां पहुंच गये थे। और देश में शांति बनाये रखने की कसमें खाने वालों ने वहां पानीपत का मैदान बना दिया था।
तू इतनी गलत बात कर रहा है। मैं तुझे गंगा जल से धोने की बजाये गंगा जल में डूबो कर पवित्र करूंगा।
मुझे लोक नायक ने प्रधान मंत्री बनने को कहा था।
किस नालायक के सामने कहा था
घसीटा राम हमारा काम कर गया है। आने वाले दिनों में यह आग लगाऊ और सर फुड़वाऊ बहुत बड़ा नेता होगा।
१५ आगामी अंक में इन असली घासलेट ब्रांड नेताओं से फिर मिलिये।

फैण्टम — जंगल शहर

समाचार
नकाबपोश ने एक प्रेमी-प्रेमिका की जान बचाई
रहस्यमय अजनबी द्वारा इस सुन्दरी को लुटेरों से बचाया ···
रहस्यमय अजनबी के बारे में यह लेख अच्छा है। क्या हम उसे जानते हैं ?
शायद

डेव, मैं उन लुटेरों को ढूंढ़ कर रहूंगा, जिन्होंने तुम्हारे ऊपर हमला किया और तुम्हारा बैंज चुराया।
यह काम इतना आसान नहीं है···
अब इनको आराम की जरूरत है···

रातों को फैण्टम का लुटेरों पर हमला···
?!
?
रहस्यमय नकाब पोश अजनबी···

धड़ाम
मुक्का
···अपना निशान ···छोड़ता हुआ
डिशू
घूंसा
···खोपड़ी का निशान !

सूचना
रहस्यमय अजनबी के कारण पार्क में लूट पाट में भारी कमी
रोजाना समाचार
पुलिस इस रहस्य का पर्दाफाश करने की भरसक कोशिश में।

प्रिय, रात देर तक बाहर मत रहा करो, अपना ध्यान रखना।
फिक न करो, डियाना।

डियाना···यह हर रात को घर से बाहर क्यों रहता है ? क्या करने जाता है ? किससे
मीटिंग में जाना पड़ता है मम्मी, कोई बात नहीं है।

रहस्यमय नकाबपोश सारे शहर के लिए चर्चा का विषय बना हुआ है।
!

आज रात हम उन लोगों से बात चीत करेंगे जिन्होंने उनको देखा है।

ये हैं कुछ लोग, जिनको नकाब पोश ने लुटेरों के चुंगल से मुक्त कराया।
समाचार दर्शन
शायद इन लोगों की मदद से उस रहस्यमत नकाब पोश का पता चल सके···

यह प्रेमियों के जोड़े उस रहस्यमय नकाब पोश द्वारा बचाए गए…
zzzzzz

दो लुटेरों ने हम पर हमला किया…

हम दोनों बुरी तरह डर गए थे फिर अचानक न जाने वह कहां से आ गया…।
!!

उन लुटेरों के पास हथियार भी थे…
लेकिन उनकी एक न चली !
मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा ।
उसकी नकाब के कारण हम लोग डर रहे थे कि शायद यह एक और लुटेरा न हो ?

लेकिन वह ऐसा नहीं था वह तो बहुत दिलचस्प, नौजवान और खूबसूरत भी था ।
खूबसूरत ? तुम्हें कैसे पता चला वह तो नकाब पहने था ?

एक लड़की ही जान सकती है ।
ठीक कह रही हो !
क्रमश :

शीर्षक सुझाइये
प्रतियोगिता
इनाम १०रु०
आप इस व्यंग्यचित्र में जो स्थिति है, उसे देखते हुए एक वाक्य का शीर्षक सुझाइये ।
'स्त्री क्या कह रही है ?'
सर्वश्रेष्ठ को पुरस्कार ।

अन्तिम तिथि :- २०-१२-१९७९
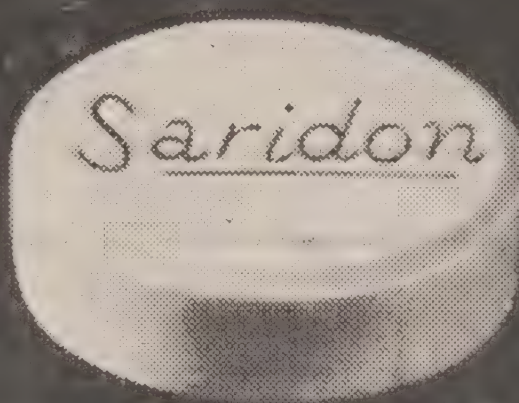
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

कुलभूषण 'टोटू', सुरेन्द्र बसल "बबलू" —नई दिल्ली : डीयर अंकल, सच-सच बताइये, आपने आंटी के बेलन का स्वाद कितनी बार चखा है ?

उ० : हर रोज ही चखते हैं, उनके बेलन से बिली स्वादिष्ट रोटी खाकर।

राजेन्द्र कुमार बेवफा —देहरादून : दीवाना में रचना प्रकाशित करवाने के लिये हमें क्या करना चाहिए ?

उ० : हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाईप की हुई रचना सम्पादक दीवाना पते पर भेजनी चाहिए—दीवाना की दीवानगी पर पूरी उतरी तो प्रकाशित कर दी जायेगी :

प्रदीप कुमार शर्मा —कानपुर : दीवाना पढ़ने वालों में बच्चों की संख्या बहुत अधिक है इस हिसाब से तो आप परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं होंगे ?

उ० : इतने गर्म प्रश्न पर तो बहुत ठंडे दिल से विचार करना होगा। वैसे हमारे पड़ौस में भी एक शर्मा जी रहते हैं। पिछले दिनों कहने लगे, "चाचा बातूनी, एक बात तो आप मानेंगे कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं ?" हमने उत्तर दिया, "हाँ हां, अवश्य मानेंगे," इस पर वे बोले, इसीलिए मैंने दो या तीन की बजाये संसार में छः भगवानों की वृद्धि की है।

अर्जुन इन्दवार रेणु, मधु बलान —जल्पाईगुडी : संसार के वैज्ञानिक वास्तव में उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं या अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं ?

उ० : पाकिस्तान के वैज्ञानिकों का तो हमें पता है कि पांव पर कुल्हाड़ी मारने की बजाये अपने पेट पर आरा चला रहे हैं। देश की जनता गरीबी से पिस रही है। बूट पालिश की डिब्बी और साबुन की टिक्की बनाना उनके बस का नहीं और चले हैं एटम बम बनाने।

राजेश कुमार अग्रवाल —दिल्ली : प्यार को आकाश की ऊंचाई से नापना चाहिये या समुद्र की गहराई से ?

उ० : इसके लिए समुद्र की गहराई में डूबना सस्ता सौदा है। आकाश की ऊंचाई से छलांग लगाने के लिए कुतुबमीनार पर चढ़ो, तो उस पर टिकट लगता है।

रोचा राम, सेवकराम —परतवाड़ा : दीवाना का प्रकाशन कब आरम्भ हुआ ?

उ० : १५ वर्ष पूर्व।

मुश्ताक अहमद, पंचुडंगा,—(प० बं०) : मैं बहुत बड़ा फिल्म स्टार बनकर दुनियां में चमकना चाहता हूं, बताइये क्या करूँ ?

उ० : राजनारायण के चेले बन जाइये, उनसे बड़ा स्टार मेकर आजकल दूसरा कोई नहीं है। उनके बनाए स्टार में दो खास बातें होती हैं। पहले तो वह ऐसा स्टार बनता है जो आकाश में चमकता है। फिर ऐसा स्टार बनता है जो जूते के तले में लगाया जाता है।

विनीत कुमार शर्मा —दिल्ली : चाचा जी, मेरे शेरों का उत्तर दीजिए।

शेर इस प्रकार हैं :

आये वो मेरी कब्र पर।
फूल ही फूल चढ़ा गये॥
पहले दबे हुये थे हम।
और हमें दबा गये॥

उ० : हमारे साथ ऐसी नौबत आई तो हम फूल चढ़ाने वालों को अपनी कब्र के पास भी नहीं फटकने देंगे। और कहेंगे :

जाना मेरे मजार से जाना परे परे।
ठोकर से जाग उठते हैं आशिक मरे मरे॥

राजेश कुमार—कैलाश नगर, दिल्ली : चाचा जी, पहले औरत दो गज का घूंघट करती थीं, अब दो गज कपड़ा ही उनकी शान बढ़ा रहा है, ऐसा क्यों ?

उ० : इसमें औरतों का नहीं, मर्दों की "पसंद" का कसूर है, हमने एक देवी जी से यह प्रश्न किया था :

पूछा जो हमने आपके पर्दे को क्या हुआ ?
कहने लगीं तो अक्ल पे मर्दों की पड़ गया।

कान्तीलाल जैविंधानी—रायपुर : क्या आप अपना कुछ हुलिया और असली नाम बताने का कष्ट करेंगे ?

उ० : क्या बतायें अपना हुलिया ? हमारे कान मोरार जी देसाई के कानों जैसे हैं, मरोड़ोगे तो खिंच जायेंगे टूटेंगे नहीं। मतलब है हम कानों के कच्चे नहीं हैं। अपने मतलब की बात न हो तो इस कान से सुनते हैं उस कान से निकाल देते हैं। सिवाय जन संघ के हमारे कानों पर किसी की जूं नहीं रेंगती। नाक हमारी आचार्य कृपलानी की नाक की तरह खतरनाक है। जो दूसरों को नाकों चने चबवाने में अपना जवाब नहीं रखती और सिवाय राजनारायण के इस नाक पर कोई मक्खी नहीं बैठ सकती। आंखें अटल बिहारी वाजपेई की आंखों जैसी हैं जिन्हें अपना विरोधी एक आंख नहीं भाता। अपनी आंख का शहतीर इन्हें कभी दिखाई नहीं दिया। और यह भंग खाकर दारू पीने की सी हालत में सदा चुंधियाई रहती हैं। मूंछ और दाढ़ी कभी राजनारायण जैसी थी। उनके बाल महंगे दामों में बेच खाये और लोगों के अरमानों पर पानी फेर दिया कि अब वे कुछ नोंचना चाहेंगे तो क्या नोचेंगे? अपने हाथ चौधरी चरणसिंह के हाथों जैसे जगन्नाथ हैं कि नेपोलियन की तरह किसी के भी सर से ताज उतारा और अपने सर रख लिया। पांव हमारे मिलखासिंह जैसे हैं। कभी किसी का कुछ लेकर भागे तो हाथ नहीं आयेंगे। अक्ल हमारी बाबू जगजीवन राम जैसी है। मतलब है जनसंघ वाले जब अक्ल फ्री बांट रहे हैं तो अपनी घिसी-पिटी भी चलेगी। शर्म हम में गुलजारी लाल नन्दा जैसी है कि कांग्रेस में जब जूतियों में दाल बंटने लगी तो अपनी जूती सम्भाल कर परे हो गये और बेशर्मी हम में सत्यम, शिवम्, सुन्द्रम् की जीनत अमान जितनी है, पर्दे पर बेपर्दगी में जिसका जवाब नहीं।

अब आप बताइये, हम में इन सब का इतना कुछ होते हुये भी हमारा अपना क्या है ? जब हमारा अपना असली कुछ नहीं है तो असली नाम से क्या बनेगा। इसलिए हम चाचा बातूनी है। हमें चाचा बातूनी ही रहने दीजिये। एक भतीजे ने हमारा नाम "राम मुहम्मद डेविड सिंह" रखा है। कहिए ने कैसा लगा ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जानवर नेता क्यों नहीं बनते ?
ZZZ
नेताओं को अपने कान में चमचों की बात सुननी पड़ती है। जिराफ नेता बने तो उसके कान इतने ऊंचे होंगे कि चमचा कान में भेद भरी बात कहने के लिए पहुंच ही नहीं सकेगा।
रीछ नेता बने तो कभी स्थायी सरकार नहीं बना सकेगा। जब भी वह सर्दियों में चार महीनों की लम्बी नींद सोयेगा तो उठने पर अपना तख्ता पलटा पायेगा।
शेर नेता बने तो उसे भाषण देना होगा, क्योंकि नेता का काम भाषण देना है। माइक पर आते ही आदतन शेर पहले गरजेगा तो ऐसी भयानक आवाज आयेगी कि सुनने वालों के कान के पर्दे फट जायेंगे और आगे का भाषण न सुन पायेंगे।
GRRR
बन्दर नेता कैसे बने ? राजनीति एक म्यान है जिसमें एक ही तलवार समा सकती है। राजनारायण पहले ही यहां मौजूद है तो दूसरे बन्दर के लिए जगह ही कहां है।
NO Vacancy
फूल मालायें पहनना नेता का फर्ज है। मछली नेता बने तो फूल माला कैसे पहनेगी ? माला शरीर पर टिकेगी ही नहीं।
नेता का सबसे बड़ा काम गरीबों की दुर्दशा देख नकली आंसू यानि मगर-मच्छ के आंसू बहाना है। मगरमच्छ नेता बन गया तो वह जब रोयेगा तो उसके असली आंसू होंगे। जो नेता नकली आंसू नहीं बहा सका वह क्या खाक का नेता हुआ।
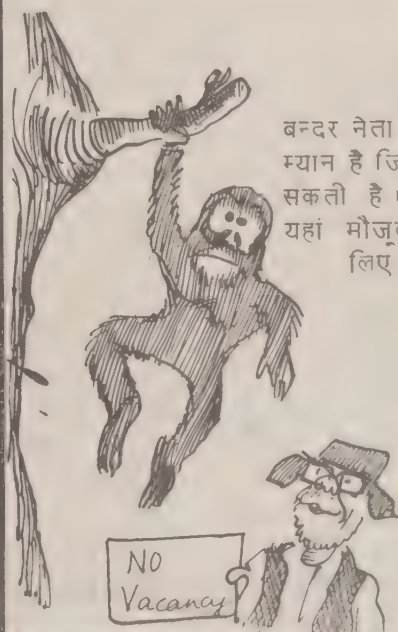
सिलबिल पिलपिल,
चुनाव की महाभारत
इस बार का मध्यावधि चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें देश की किस्मत का फैसला होना है और थम दोनों ऐसे बैठे हो जैसे अफीमची चंडूखाने में बैठे होते हैं। वह १९७७ वाला जोश तुममें कहां गया ?
१९७७ वाला जोश राजनारायण की दाढ़ी के साथ हो गया जो में बह गया, हम कर ही क्या सकते हैं ?
चूहे तू हमको कीचड़ में घसीटना चाहता है ?
१९७७ में थमने दिन रात मेहनत करके जनता पार्टी को जिताया, लेकिन वह नकली साबित हुयी। जिसे तुम स्टेनलैस स्टील समझ बैठे, वह लोहा निकला। फिर थमने चौधरी चरण के लिए अपनी हड्डियां तुड़वाईं। किसान सम्मेलन के लिए खून पसीना एक किया, बाद में वही सम्मेलन जोकर राजनारायण गठरी में बांध चलता बना और चौधरी चरण सिंह कुर्सी के लिए अपनी पगड़ी बेच दलबदलू बन गया। खराबी थममें नहीं है। खराबी उन लोगों में थी जिनके लिये थमने काम किया। थमारे जैसे लायक बलैत ट्रैन्ड आदमी पर्दे के पीछे ही रहे। थम दोनों खुद नेता बनकर सामने आओ। खुद देश की बगडोर सम्भालो। खुद अपनी पार्टी बनाकर चुनाव लड़ो और देश को बचाओ।
चरण सिंह, इन्दिरा गांधी और जगजीवन राम जैसे नक़ली नेता मध्यावधि चुनाव का षड्यन्त्र रचकर देश को हड़पने के लिए तैयार बैठे हैं। उनका षड्यन्त्र विफल करना है। सारा देश इस बात को समझ गया है। इन राजनीतिज्ञों में किसी का विश्वास नहीं रहा है।
हिन्दुस्तान में इन तीनों को निकालने के बाद बाकी कौन लीडर बचा ? थम दोनों ही तो बचे मेरे यार। सारे देश की नजरें थम दोनों पर लगी हैं। सारी उम्मीदें थम दोनों पर कायम हैं। ऐसे में ६५ करोड़ जनता को निराश मत करो।
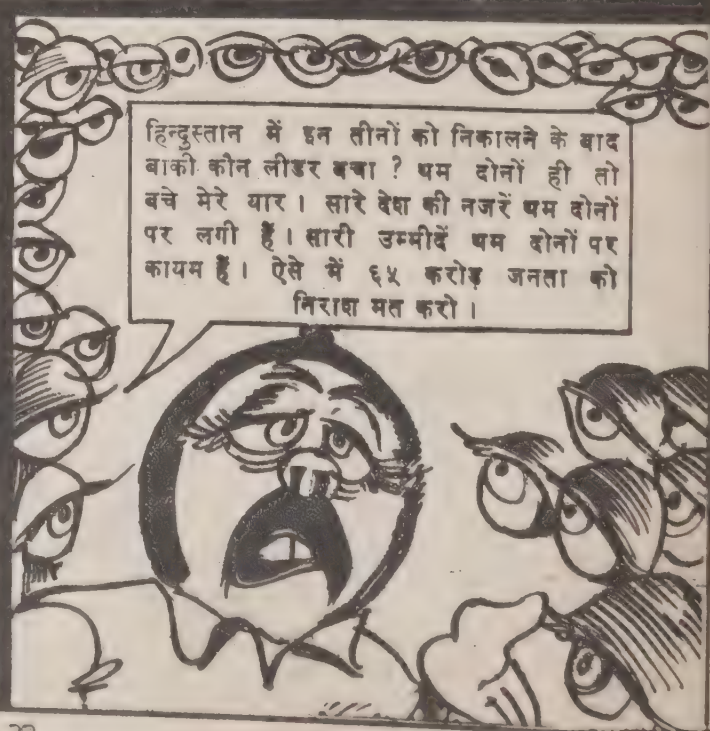
हमने फैसला कर लिया है कि हम अपनी अलग पार्टी बना कर चुनाव लड़ेंगे और देश को बचा लेंगे। पहले पार्टी का अच्छा सा नाम रखना होगा। मेरे ख्याल से हमें पार्टी का नाम प्रेम चन्द रखना चाहिए।
पार्टी का नाम प्रेमचन्द रखेगा? अरे कुत्ते की दुम पार्टी का नाम आदमी जैसा नहीं होता, कोई सार्थक नाम होना चाहिये जैसे समाजवादी पार्टी।
तो फिर हम अपनी पार्टी का नाम दूध-मलाई रखते हैं! दूध-मलाई का नाम सुनते ही लोगों के मुंह में पानी आ जायेगा।
बात तो ठीक है, हमारी दूध मलाई की सभा होगी तो लाखों लोग यही सोच कर चले आयेंगे कि शायद इस मीटिंग में दूध मलाई मिलेगी।
इसमें एक ही खराबी है वह यह है कि नाम दकियानूसी लगता है। माडर्न नाम होना चाहिये। आजकल डाइटिंग का युग है, लोग दूध मलाई से दूर भागते हैं, खासकर कॉलिज में पढ़ने वाली स्लिम लड़कियों के लिये तो जहर है। थमारी चुनाव सभा में लड़कियां ही नहीं आयेंगी तो सभा की रौनक कैसे बढ़ेगी? ऐसी गलती मत करना।
गरीब चन्द की बात काफी हद तक ठीक है। हमारी पार्टी जनता की पार्टी होगी इसका नाम होना चाहिये कि लोगों को अपनी ही पार्टी लगे। ऐसा।
ठीक है भाई, मेरे दिमाग में एक जोरदार नाम आया है। हम अपनी पार्टी का नाम 'गरीब की जोरु' पार्टी रखेंगे। हमारी पार्टी को सब अपनी भाभी समझेंगे क्योंकि गरीब की जोरु सबकी भाभी होती है।
मिल गया! मिल गया!! हमारी पार्टी का नाम होगा
'आपकी पार्टी'
आपकी पार्टी अपने आप सबकी पार्टी हो गयी। बोल सिया पति रामचन्द्र की जै।
आपकी पार्टी शहरी नाम लगता है। इससे नवाबीपन की बू आती है। भारत के देश की ८०% जनता गांवों में रहती है। अतः सबसे पहले हमें उनका ध्यान रखना है। इसलिये हम अपनी पार्टी का नाम आपकी पार्टी नहीं बल्कि थमारी पार्टी रखेंगे।
थमारी पार्टी में अपनापन भी झलकता है, कोई फॉरमैलिटी नहीं।

हम अपनी पार्टी का चुनाव चिन्ह जलेबी रखेंगे। जलेबी का नाम सुनते ही गाम की औरतों के मुंह में पानी आ जाता है। मेलों में गाम की औरतें कितनी लालचाई नजरों से जलेबी के थाल को देखती हैं। सभी गाम की बहनों के वोट हमें मिलेंगी।
लेकिन जलेबी बहुत मीठी चीज है। डायबिटीज के मरीजों को डाक्टर लोग मीठी चीज खाने मे साफ मना करते हैं। जलेबी चुनाव चिन्ह रखने पर हम सभी डायबिटीज के मरीजों के वोट खो देंगे। हमें ऐसा चिन्ह रखना है कि हिन्दुस्तान का एक भी वोट बाहर न जाये।
हम अपना चिन्ह आइसक्रीम रखते लेकिन इसमें एक रोग है, सब बच्चों के वोट हमें मिलते लेकिन बच्चों को वोट का अधिकार नहीं है। कितनी बुरी बात है।
गोल गप्पे रखें अपना चुनाव चिन्ह। कम से कम नारी जाति के सारे वोट तो हमें ही मिलेंगे। अपनी सभाओं में लोगों को हम गोल गप्पे मुफ्त खिलायेंगे।
अरे भाइयों, लड़का बगल में और ढिंढोरा शहर में ?
चुनाव चिन्ह कुर्सी
हम लड़ भी तो कुर्सी के लिए ही रहे हैं। लोगों को पता लगेगा कि
और हमारा झंडा होगा पाजामा। लोगों के फटे पुराने पाजामे काम आयेंगे। पाजामा हिन्दुस्तान की जनता का प्रतीक है। देश में अधिकतर लोग पजामे ही हैं।
फटे पुराने कपड़ों से बर्तन बदलने वालियों से हम चुनाव समाप्त होने के बाद ढेर सारे स्टेनलैस स्टील के बर्तन लेकर अपने किचन को चकाचक कर सकते हैं। हमारे पास कितने सारे पाजामे जमा हो गये होंगे।
इस झण्डे को
जनता में एक नये
का संचार
के फटे
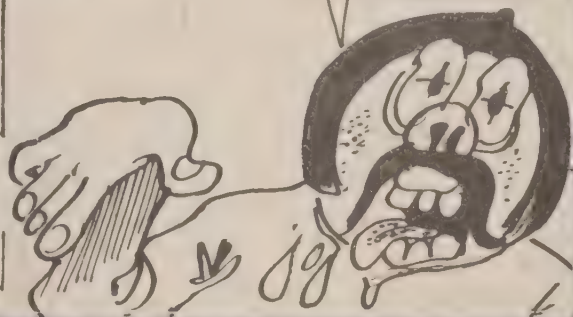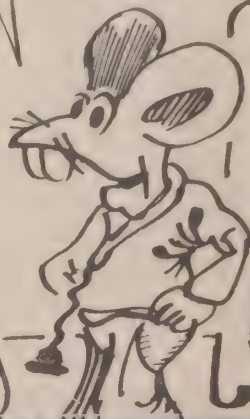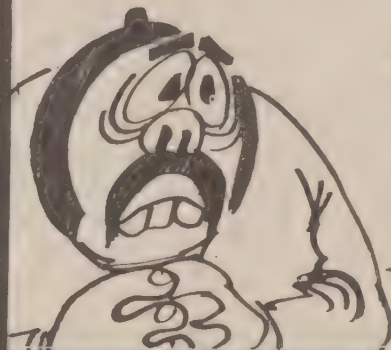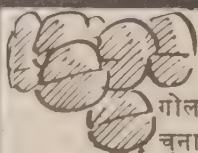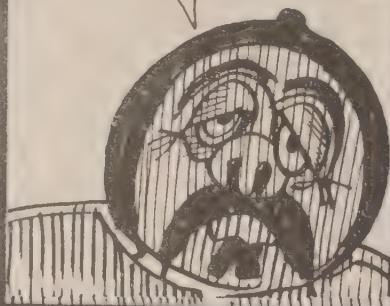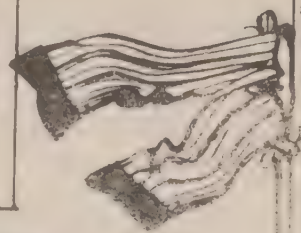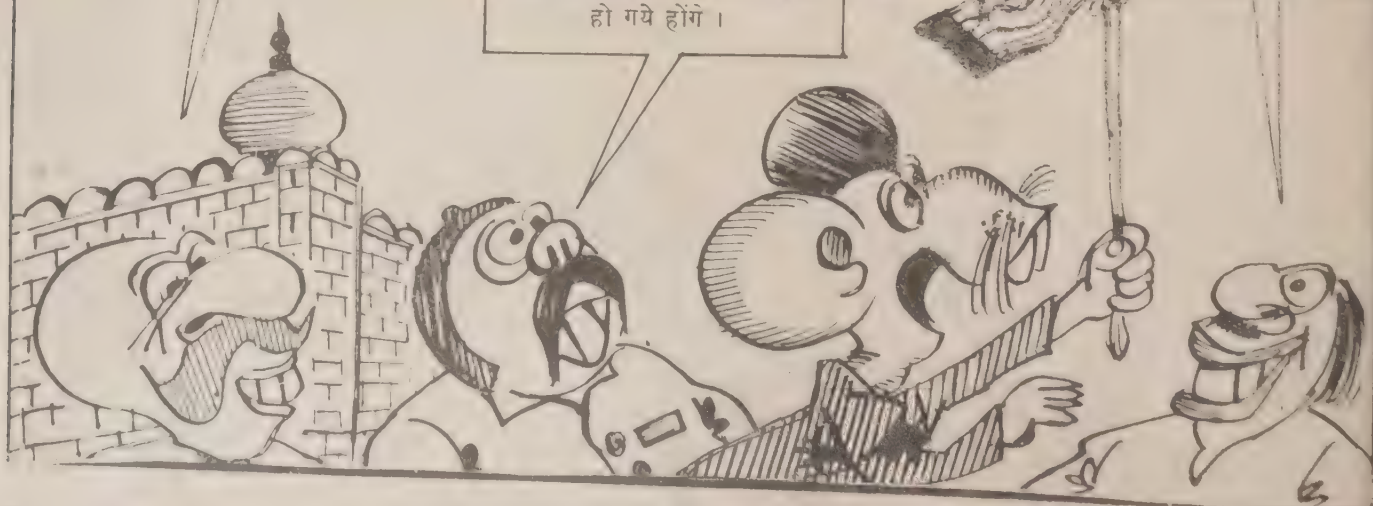
मैं अब तक समझ रहा था कि चुनाव इन्दिरा गांधी जीतेगी लेकिन अब मेरा विचार बदल रहा है। अब लग रहा है कि यह चुनाव तो पाजामा झंडा वाली थमारी पार्टी ही जीतेगी। पांच सौ में से छः सौ सीटें इनकी पक्की हैं चाहे कोई मुझसे शर्त लगवा ले।
असली अपना तुरुप का पत्ता तो हमने थमको दिखाया ही नहीं। जैसे ही हम अपनी तुरुप वाली चाल चलेंगे सबके पत्ते धरे रह जायेंगे। हम स्टेज पर पिलपिल सिलबिल को इस भेष में ला खड़ा करेंगे कि सब भौंचक्के रह जायेंगे, अपने भविष्य के नेता को देख छाती पीटेंगे।
हमारी लड़ाई अमीरों के खिलाफ है।
हम जनता के सच्चे सेवक हैं।
भाइयों आप लोग खुद दीदे फाड़ कर देख लो, थमारी पार्टी के नेता सिलबिल और पिलपिल अमीरों के पिट्ठू नहीं हैं, गरीब जनता के उम्मीदवार हैं। अमीरों के साथ की लड़ाई में इनके कपड़े लत्ते बिक गये हैं लेकिन इन्होंने हौसला नहीं छोड़ा। फटी बनियान और टाँकेदार कच्छे पहन कर चुनाव के मैदान में कूद पड़े हैं। सारी गरीब जनता इनके साथ है। गरीब जनता की अमीरों के साथ लड़ाई में यह गरीबों की फौज के जनरल हैं। देश की सारी जनता इनके साथ है। आप अमीरों की सारी चालें नाकामयाब करें। इनको वोट देकर भारी बहुमत से जितायें।
थमारी पार्टी वोट पड़ने से पहले ही जीत गयी है। उनके मुकाबले जो भी मैदान में उतरेगा उसकी जमानत जब्त हो जायेगी। यही देश को नयी स्थायी सरकार दे सकते हैं।
यह आकाशवाणी है। अब आप विशेष चुनाव परिणाम बुलेटिन सुनिये। ताजा समाचारों के अनुसार आल इंडिया थमारी पार्टी को मध्यावधि चुनावों में पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया है। थमारी पार्टी के उम्मीदवार गरीब चन्द रायबरेली से कांग्रेस आई पार्टी की अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा गांधी को हरा कर लोक सभा के लिये चुने गये हैं। बागपत में पिलपिल ने तीन लाख वोटों से चौधरी चरण सिंह को परास्त किया है। चौधरी चरण सिंह की जमानत जब्त हो गयी है। सासाराम में बाबू जगजीवन राम सिलबिल से हार गये हैं। थमारी पार्टी के एक गधे ने राजनारायण को हरा दिया है।
सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।
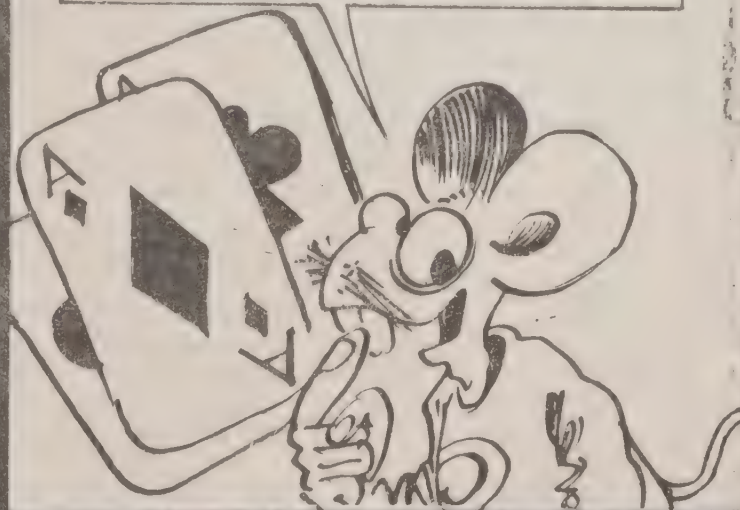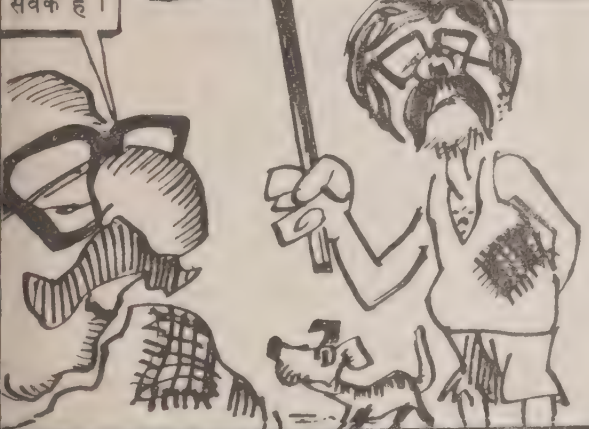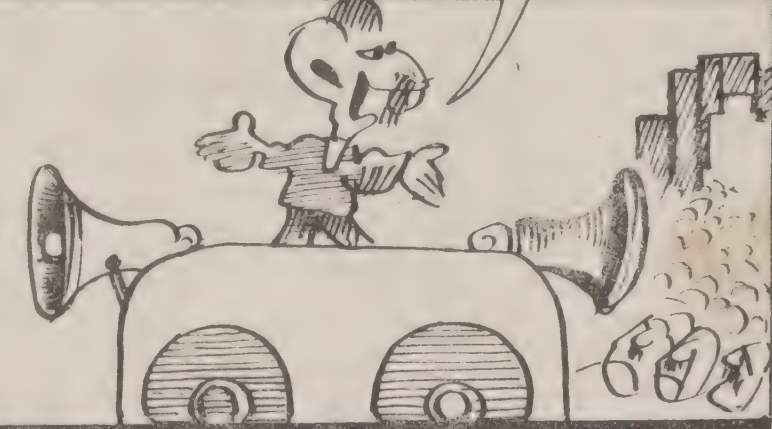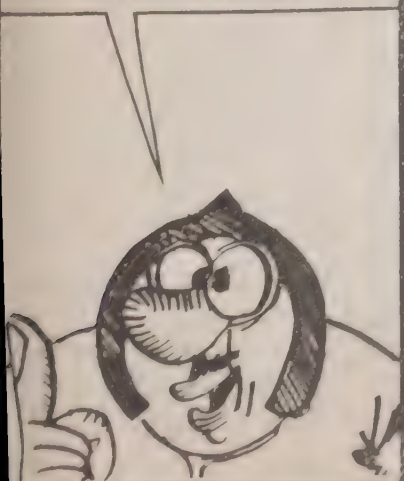
प्र० स्पन्ज क्या है तथा ये अपना भोजन कैसे और कहां से प्राप्त करते हैं ?

मदन मोहन—मेरठ

उ० : वास्तव में स्पन्ज एक पशु है, का विश्वास करना अत्यन्त कठिन है। प्राणि-जगत् के स्पन्ज सबसे अद्भुत जीव हैं तथा ये पशु से अधिक वनस्पति दिखाई देते हैं।

संसार में पांच हजार भिन्न किस्मों के स्पन्ज पाये जाते हैं। हरे, पीले, भूरे, लाल, नारंगी से सफेद रंग तक के होते हैं। इनकी शक्लें भी भिन्न-भिन्न होती हैं। कोई पंखे जैसी, कोई गुम्बदनुमा, कोई फूलदान या कटोरे जैसी तथा कोई ट्रम्पेट जैसी भी होती हैं। कुछ स्पन्ज वृक्षों के समान बढ़ते हैं तो दूसरे चपटे फैले हुए स्पन्ज के रेशे से बने पानी के भीतर की चट्टानों पर, सीपों पर या लकड़ी पर फैले हुए होते हैं। कुछ स्पन्ज एक इंच से भी छोटे तो दूसरे दो, तीन फुट लम्बे, चौड़े और ऊँचे होते हैं।

व्यस्क स्पन्ज कभी भी हिलते-जुलते नहीं हैं। हालांकि स्पन्ज एक जीवित पशु है, फिर भी छूने पर इसमें कोई प्रतिक्रिया नही होती। स्पन्ज के सिर या मुंह नहीं होता। इसके आंखें, कान, फीलर या अनुभव इन्द्रियां भी नहीं होतीं। हृदय, उदर, मांस-पेशियां या नस तन्तु भी इनके नहीं होते। यदि एक जीवित स्पन्ज के काट कर दो टुकड़े कर दिये जायें तो एक गिलगिला लोथड़ा जिसमें छेद और नलियां होती हैं दिखाई देता है। इससे स्पन्ज को पशु कहना लगभग नामुमकिन ही है। यही कारण है कि लम्बे समय तक वैज्ञानिक भी स्पन्ज को पशु नहीं समझते थे।

परन्तु सोचने की बात ये है कि स्पन्ज का कौन सा गुण उसे प्राणि जाति में सम्मिलित करता है। उत्तर है कि स्पन्ज पशुओं के समान अपना भोजन पकड़ते हैं और पेड़ पौधों के समान अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते। आसपास के पानी में से भोजन के लिये नन्हें पौधों तथा जीवों को पकड़ता है। स्पन्ज के हाथ जुड़े छोटे-छोटे धागे के समान फैले पानी को स्पन्ज के भीतर धकलते रहते हैं। इन फैलाओं के निचले भाग पर एक चिपचिपी सतह होती है, जिस पर भोजन चिपक जाता है। कुछ भोजन तो यहीं पचा लिया जाता है तथा कुछ स्पन्ज के भीतर घूमते अणुओं द्वारा स्पन्ज के दूसरे भागों में पहुंचा दिया जाता है।

प्र० : क्या मंगल ग्रह पर जीवन है, इस ग्रह की सतह कैसी है तथा इसके अपने कितने चन्द्रमा हैं ? अमृतराज—पटियाला

उ० : बहुत लम्बे समय से ये समझा जाता है कि सौर मंडल में पृथ्वी के अतिरिक्त मंगल पर भी जीवन है। परन्तु मंगल के निवासी दोस्त या दुश्मनों के बारे में कही गई सभी कथायें काल्पनिक तथा गलत हैं। क्योंकि मंगल पर बुद्धिजीवी जीवन कतई सम्भव नहीं है। मंगल की भूमध्य रेखा पर मध्यान्ह के समय तापमान २५ डिग्री सैंटीग्रेड तक होता है तथा इस ग्रह का दिवस २४ घंटे २७ मिनट लम्बा होता है। ये दोनों ही बातें

अगर आज आप मेरा कर्जा चुका दें तो आपका बहुत अहसान होगा !

लेकिन आज आप गलत वक्त पर आये हैं !

तो कब आऊँ ?

ASHOKLALL

जब मैं घर पर ना रहूँ !!

पृथ्वी से मिलती जुलती हैं परन्तु मंगल का तापमान घट कर ११० पर पहुंच जाता है इसके अलावा ५ ग्रह का वायु मंडल मील भरी कारबन-डाई-ऑक्साईड से भरा है और यहां की वायु ऊंचे पहाड़ों की चोटियों की वायु से भी पतली हो जाती है। इस कारण किसी भी विकसित जीवन का मंगल पर होना असम्भव है अपितु कुछ निम्न स्तर की वनस्पति जीवन का होना सम्भव हो सकता है।

मंगल की सतह चन्द्रमा के समान ही पहाड़ियों तथा गढ़ों से ढकी हुई है परन्तु अनुमान है कि यहां के गढ़े चन्द्रमा के गढ़ों से कम गहरे हैं क्योंकि सदियों से मंगल चलने वाली तेज हवाओं ने इन्हें काफी अ व्यस्त कर दिया है। ये ग्रह लाल रंग का टेलीस्कोप द्वारा इस पर नीले मटिय निशान भी दिखाई देते हैं। इन निशानों समुद्र समझा जाता था परन्तु ये समुद्र न हैं और न ही इनमें हरियाली के होने संभावना है। परन्तु संभव है इन स्थानों भूमि की सतह ऊंची हो। खगोलज्ञों द्वा मंगल पर के निशानों को नहरें समझा जा था। परन्तु अन्तरिक्ष खोज करने वालों त इस ग्रह की ली गई तस्वीरों से अनुमान कि ये केवल पर्वतों की पंक्तियां ही हो सक हैं।

पृथ्वी के समान ही मंगल की भ ध्रुवीय टोपियां हैं परन्तु ये बर्फ की न होक जमी हुई कारबन-डाई-ऑक्साईड की हैं। टोपियां ऋतुओं के अनुसार ही घटती तथ बढ़ती हैं। मंगल ग्रह का वर्ष पृथ्वी के ६८ दिनों का होता है, तथा ये पृथ्वी से आधे से कु ही बड़ा है। इस ग्रह पर उतरने वाले अंतरि यात्री का भार अपने भार का ४/१० वां भा रह जायेगा परन्तु इस पर मनुष्य पूरी खो किये बिना नहीं जा पायेगा। अमरीका द्वार सन् १९६५ में मेरीनर ४ तथा १९६९ मेरीनर ६-७ द्वारा मंगल के बारे में बहुत-स नई जानकारी प्राप्त की गई है, इन्हीं खोज से वहां के प्रतिकूल वातावरण का भी पत चला है। सन् १९७३ में नई खोज की ग उनमें भी मंगल पर जीवन की कोई संभावन नही पाई गई।

मंगल के अपने दो चन्द्रमा हैं, 'फोबोस तथा 'डाइमोस' इनकी खोज सन् १८७७ में हुई थी। फोबोस १७×२२ किलो मीटर व्यास का है तथा 'डाइमोस' केवल ८×८ किलो मीटर व्यास का है। ये चन्द्रमा सौर मंडल के सभी चन्द्रमाओं से छोटे हैं तथा सम्भव है कि ये वास्तविक चन्द्रमा होकर सौर-मंडल में पकड़ी गई उल्कायें ही हों। फोबोस मंगलग्रह के समीप है, तथा इस ग्रह का पूरा चक्कर ७ घंटे ३९ मिनट में पूरा कर लेता है। मंगल से देखने पर सूर्य दिन में दो बार पश्चिम से उदित हो चक्कर पूरा कर पूरब में अस्त हो जाता है। 'फोबोस' जिसके चित्र खोज करने वाले मेरीनर द्वारा लिये जा चुके हैं—सौर मंडल की सबसे काली बौडी है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

कभी-कभी मेरे दिल में ये ख्याल आता है, कि जैसे तुझको बनाया गया है, मेरे लिए...।
बन्द करो बकवास, और बाहर निकलो, इस बाथरूम को तुम्हारे लिए नहीं, हम सबके लिए बनाया गया है, क्योंकि पब्लिक बाथरूम है, समझे !
चल उड़ जा रे पंछी कि अब ये देश हुआ बेगाना।
बन्द करो बकवास, इसे पंछी नहीं मुर्गी कहते हैं, और यह मुर्गी मेरी है इसे उड़ाकर कहां ले जाना चाहते हो, जरा सुनो तो।
राम करे ऐसा हो जाए मेरी निंदिया तोहे मिल जाए, मैं जागूं तू सो जाए-हो...।
बन्द करो बकवास, तुम्हारी आवाज सुनकर मुन्ना तो क्या, नींद से उठ कर सारे पड़ौसी रोने लगे हैं।

'तुम अपने घर जाना चाहती हो बेटी ?'

'जी—जी हां।'

'तुम्हारा नाम क्या है ?'

'जी मुन्नी···।'

'मुन्नी···यह तो शायद प्यार का नाम होगा तुम्हारा पूरा नाम भी तो कोई होगा ?'

'जी—मोना।

'और तुम्हारे पिता का नाम ?'

'जो ठाकुर धर्मपालसिंह।

'कौन से गाँव की रहने वाली हो ?'

'जी हीरापुर—सन्तानपुर के पास।'

'अच्छा-अच्छा···हम समझ गए हैं—हम तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देंगे—तुम ठहरो, हम अभी आते हैं।'

सेठ साहब बाहर निकल गए···मुन्नी उन्हें जाते देखती रही। घर जाने के विचार से वह खुश हो गई थी।

सेठ साहब मुन्नी को लेकर बरामदे से उतरे और कार का पिछला दरवाजा खोल कर उसके साथ ही सीट पर बैठ गए—कार स्टार्ट करके जैसे ही ड्राइवर फाटक की ओर बढ़ा सेठ साहब ने ड्रावर से कहा—

'ड्राइवर ! हम लोग हीरापुर चलेंगे।'

'हीरापुर—और अभी साहब···?'

'हां—अभी कौन-सा समय गुजरा है—सुबह के दस ही तो बजे हैं।'

'साहब···मैं सोच रहा था मालकिन घर पर प्रतीक्षा कर रही होंगी।'

'उन्हें मैंने टेलीफोन कर दिया है कि मैं एक जरूरी काम से जा रहा हूं—शाम से पहले नहीं लौट पाऊंगा।'

'जी साहब···!' ड्राइवर ने कहा, 'मगर हीरापुर क्यों जा रहे हैं साहब···?'

इस बच्ची का घर हीरापुर में ही है।'

'ओहो—लेकिन साहब···मालकिन तो यह समझ रही हैं कि उनकी पद्मिनी बिटिया हस्पताल में है। अब आप मालकिन को लौट कर क्या जबाब देंगे ?'

'ड्राइवर···।' सेठ साहब ने भर्राई हुई आवाज में कहा, 'अब तो जो ईश्वर को स्वीकार होगा वही होगा। भगवान न करे, अगर यह बच्ची अनाथ होती तो मैं कह देता यही पद्मिनी है—शोभना बेचारी को क्या पहचान होती···उसकी आंखें तो भगवान ने छीन ही ली हैं—लेकिन जब उसका घर परिवार है तो फिर उसको माता-पिता के पास पहुंचाना भी तो जरूरी है—तुम स्वयं सोचो···इसके माता-पिता के मन पर क्या बीत रही होगी इसके लिए ?—कैसे तड़प रहे होंगे वह लोग···जैसे···जैसे···मैं अपनी बेटी के लिए तड़प रहा हूं।'

बोलते हुए सेठ साहब की आवाज भर्रा गई। उन्होंने मुन्नी की ओर देखकर उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा। धीरे-धीरे मुन्नी

का डर दूर होता जा रहा था···उसका स्थान एक अनजानी बेचैनी ने ले लिया था। सेठ साहब ने ध्यान से उसका भोला-भाला चेहरा देखा···फिर आँसू पोंछकर मुस्करा के बोले—

'क्यों बेटी···क्या तुम दुल्हा-दुल्हन का खेल-खेल रही थीं ?'

'जी—नहीं तो···।'

'फिर तुम्हारे बदन पर यह दुल्हन का लाला जोड़ा···कलाइयों में हरे कांच की चूड़ियां···हाथों पैरों में मेंहदी···यह सब कुछ क्यों हैं ?' सेठ साहब ने पूछा।

'जी—बापू ने मेरी शादी की थी।'

'शादी···?' सेठ साहब चौंककर सीधे बैठ गए, 'और इतनी छोटी आयु में ?'

'साहब···' ड्राइवर ने कहा, 'अभी गांव देहातों में कम पढ़-लिखे लोगों में बाल-विवाह को बुरा नहीं समझा जाता।'

अच्छा बेटी''' सेठ साहब ने मुन्नी से पूछा, "तुम्हारी ससुराल कहां है ?''

'जी—मुझे नहीं मालूम।'

'तुम्हें ससुराल के गांव का नाम भी नहीं मालूम ?'

'जी नहीं···।'

'और तुम्हारे सास-ससुर का नाम ?'

'जी वह भी नहीं मालूम।'

'पति का नाम भी नहीं मालूम ?'

'जी उनका नाम तो मालूम है लेकिन माँ ने कहा था पति का नाम कभी मत लेना—पाप लगता है।'

'लेकिन यह सब लोग हैं कहां ?'

'जी पूरी बरात बाढ़ में बह गई थी—उसी में बह भी वह गए थे।'

'क्या ?' सेठ साहब हड़बड़ा गए, 'पूरी बारात बह गयी थी ?'

'जी पुल टूट गया था।'

मुन्नी ने बारात डूबने की सारी दुर्घटना सुना दी। सेठ साहब सन्नाटे में बैठे रह गए। कुछ देर बाद उन्होंने मुन्नी के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और ड्राइवर को संबोधित करते हुए बोले—

'ड्राइवर···।'

'जी साहब।'

जरा मासूम गुड़िया की उम्र देखो···और फिर शादी···इस पर यह घोर दुःख कि बेचारी इतनी छोटी आयु में विधवा भी हो गई।'

'जी हां—और सबसे बड़ा अन्याय यह है कि अब इसके माता पिता इसका दूसरा ब्याह भी नहीं करेंगे। इसलिए कि अब यह बाल विधवा कहलायेगी···पुराने विचारों के देहात के लोगों में अभी तक यही रिवाज है कि लड़की का एक ही ब्याह होना चाहिए—और साहब, अगर लड़की के माता-पिता अपने विचार को बदलना भी चाहेंगे तो कोई दूसरा इस निर्दोष का हाथ थामने को तैयार नहीं होगा—इस गरीब को 'पनवति' समझा जाएगा।

'जि··जि···जि···।' सेठ साहब ने मुन्नी के सिर पर प्यार से हाथ फेरकर कहा, 'बेचारी का जीवन ही समाप्त हो गया···सारी खुशियां सदा के लिए रूठ गईं—लेकिन इस बेचारी का क्या दोष है ? यह बच्ची तो अभी ब्याह का मतलब भी नहीं समझती होगी।'

'और क्या मालिक—भगवान जाने इस देश का सड़ा हुआ समाज कब बदलेगा।

'ड्राइवर, इस देश का समाज तब बदलेगा जब इस देश के देहात बदलेंगे···देश के हर देहात में शिक्षा का प्रकाश पहुंचेगा··· दुनिया हमारे देश को देहातों का देश कहती है ना।'

'जी हां सेठ साहब, आप ठीक कहते हैं।'

सेठ साहब, करुणा-भरी दृष्टि से मुन्नी को देखते हुए उसके सिर पर हाथ फेरते रहे।

कार अभी हीरापुर से कई फर्लांग दूर थी कि बहुत सारे पुलिस के कांस्टेबलों ने कार का रास्ता रोक लिया। सेठ साहब ने घबराकर खिड़की से झांककर पूछा—

'क्या बात है भई ?'

'साहब, गाड़ी आगे नहीं जाएगी।'

'क्यों भई—क्यों ?'

'आपको मालूम नहीं साहब···बाढ़ के पानी ने जमना के आस-पास के सारे इलाकों को अपनी लपेट में ले लिया है। यह जगह तो ऊंची है इसलिए पानी से बची हुई है कई गाँव पूरे के पूरे बह गए हैं।'

'ओहो···और हीरापुर गांव···।'

'साहब हीरापुर गांव का तो एक मवेशी तक नहीं बचा···जमुना के सबसे निकट वही गाँव था···वहां तो किसी मकान का निशान भी दिखाई नहीं देता—ऐसे लगता है जैसे यहां कभी कोई आबादी थी ही नहीं।'

'नहीं···!' सेठ साहब सन्नाटे में खड़े रह गए थे।

'साहब···।' एक कांस्टेबल ने कहा, हीरापुर में आपका कोई रिश्तेदार था ?'

'हां···' सेठ साहब ने कार में बैठी मुन्नी की ओर संकेत करके कहा, इस बच्ची के माता-पिता थे—यहां के कोई धर्मपाल सिंह।'

तो साहब आप गाड़ी यहीं छोड़कर उधर ऊपर चले जाइए—ऊपर रिलीफ कैम्प लगा हुआ है—आस-पास के कुछ आदमियों को बचाया गया है—हो सकता है इसके माता-पिता वहीं मिल जाएं।

'अच्छा···' सेठ साहब ने कहा, 'आओ बेटी···आओ गाड़ी से उतर आओ।'

मुन्नी घबराई हुई गाड़ी से उतर आई और सेठ साहब का हाथ पकड़कर रिलीफ कैंप की ओर बढ़ गई।

सेठ साहब ने मुन्नी के साथ रिलीफ कैम्प का एक-एक भाग छान मारा लेकिन मुन्नी के माता-पिता का पता नहीं चला। मुन्नी की घबराहट बढ़ती जा रही थी। जब वह लोग निराश होकर कैम्प से बाहर निकले तो मुन्नी फूट-फूटकर रोने लगी···सेठ साहब की आंखें भीग गईं। उन्होंने मुन्नी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—

'मत रोओ बेटी···भगवान को जो स्वीकार होता है वह होकर रहता है।'

'हाय मेरे बापू···हाय मेरी मां···।' मुन्नी रोती हुई बोली।

'बस कर बेटी···बस कर···धीरज रख।'

सेठ साहब बड़ी मुश्किल से मुन्नी को सान्त्वना देते हुए कार की ओर लाए। रास्ते में उन्होंने मुन्नी से पूछा—

'बेटी···तुम्हारे माता-पिता के अलावा क्या किसी और गांव में तुम्हारा कोई जानने वाला नहीं था ?'

'मेरे एक मामा थे सतनामपुर गांव में ···' मुन्नी रोती हुई बोली, 'लेकिन वह मेरी शादी में हमारे गाँव ही आए हुए थे···।'

'ओह···तब तो वह बेचारे भी कहां होंगे···वैसे भी जो हाल हीरापुर का हुआ है वही सतनापुर का भी हुआ होगा।'

मुन्नी फिर बिलख-बिलखकर रोने लगी —सेठ साहब उसे सांत्वना देते रहे।

कार वापस शहर की ओर दौड रही थी। सेठ साहब मुन्नी के साथ पिछली सीट पर बैठे हुए थे। वह बार-बार करुणा दृष्टि से मुन्नी को देखने लगते थे। मुन्नी एक सहमी हुई चिड़िया के समान चुपचाप बैठी हुई थी। उसकी आंखों के आंसू सूख चुके थे···होंठों पर पपड़ियां-सी जम गई थीं···आंखों में और चेहरे पर दुख का एक जमाव-सा हो गया था। रास्ते में ड्राइवर ने कहा—

'मालिक···।'

'हां ड्राइवर···।'

'भगवान जो करता है अच्छा ही करता है मालिक···होनी की कोई टाल नहीं सकता। इस निर्दोष बच्ची के भाग्य में शायद यही लिखा हुआ था···लेकिन साथ ही हर खराबी में कोई अच्छाई भी छुपी होती है···।'

'वह क्या ?'

'मालिक···एक तो यह कि शायद इस बहाने मालकिन को नया जीवन मिलना था ···आप उनसे कह सकते हैं कि पद्मिनी बेटी को अब होश भी आ गया और वह ठीक हो गई।'

'वह तो मैंने पहले ही सोच रखा था।'

'दूसरी अच्छाई यह है मालिक कि अब यह बाल विधवा नहीं कहलाएगी और आप इसकी शादी भी कर सकते हैं बड़ी होने पर।'

'तुम ठीक कहते हो ड्राइवर···' सेठ साहब के स्वर में हलकी-सी खुशी थी, 'मेरे वह सारे सपने पूरे हो जाएंगे जो मैंने पद्मिनी के लिए देखे थे। भगवान ने पद्मिनी को देकर तुम्हारी मालकिन को दोबारा मां बनने के योग्य नहीं छोड़ा था—मैं पद्मिनी को बेटी भी समझता और बेटा भी। सोचता था कि मेरा जनवाई ही अब मेरा बेटा होगा—और अब···अब मेरा यह सपना भी पूरा हो जाएगा।'

'लेकिन मालिक···अगर किसी दिन मालकिन पर यह भेद खुल गया तो···?'

'नहीं, नहीं, शोभना पर यह भेद कभी नहीं खुलेगा—कभी नहीं।'

'मालिक, कोई भी जानने वाला यह भेद खोल सकता है। इस शहर में भला आपको कौन नहीं जानता ?'

'सेठ साहब बुरी तरह कांप गए और फिर कंपकंपाती आवाज में बोले—

'नहीं-नहीं''' मैं''' मैं''' अब इस शहर में रहूंगा ही नहीं''' किसी-न-किसी बहाने से मैं यह शहर छोड़ दूंगा और स्थाई रूप से अपना कारोबार बम्बई में आरम्भ कर दूंगा।'

'हां मालिक''' यह ठीक है—लेकिन यह सारी बातें मुन्नी बिटिया को भी समझा दीजिए।'

सेठ साहब ने चौंककर मुन्नी की ओर देखा और फिर उसके सिर पर हाथ रखकर पुकारा—

'मुन्नी बेटी'''!'

मुन्नी ने चौंककर खाली-खाली नजरों से सेठ साहब की ओर देखा। सेठ साहब धीरे से बोले—

'बेटी''' तुम अब यह तो जानती ही हो कि तुम्हारे माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं''' तुम्हारे मामा भी अब नहीं होंगे।'

मुन्नी की आंखें भीग गईं—सेठ साहब ने मुन्नी के सिर पर हाथ फेरा और बोले—

'बेटी जिनका कोई नहीं होता''' उनका भगवान होता है—तुम अपने-आपको अनाथ मत समझो''' आज से मैं तुम्हारा पिता हूं और मेरी पत्नी तुम्हारी मां'''

'बाबूजी''' मुन्नी सिसककर सेठ जी के सीने से लग गई।

सेठ साहब ने उसे प्यार से भींचकर थपकते हुए कहा—

'बेटी—तुम्हारी ही तरह भगवान ने हमें भी बेटी दी थी''' वह भी इस तरह कि मेरी पत्नी शोभना जब माँ बनने वाली थीं तो वह सीढ़ियों पर से फिसल गईं''' इस दुर्घटना में उनकी आंखें भी चली गयीं—और जब वह पद्मिनी की मां बन गईं तो डाक्टरों ने बताया कि उनकी और कोई सन्तान नहीं हो सकेगी। तो बेटी''' मेरे और शोभना के लिए पद्मिनी ही सब कुछ थी।

लेकिन''' लेकिन भगवान की जाने क्या इच्छा थी''' जिस दिन जमना में बाढ़ आई उस दिन मैं अपने एक दोस्त के गाँव उसके बड़े बेटे की शादी पर गया हुआ था और पद्मिनी भी हट करके मेरे साथ चली गयी थी। वापसी में थोड़ी रात हो गयी और उधर आस-पास के इलाकों में जमना का पानी बढ़ने लगा तो हमारे लिए यात्रा चालू रखना मुश्किल हो गया—मजबूरन हमको दीनापुर के डाक बंगले में रुकना पड़ा जो काफी ऊंचाई पर था।

जब सुबह हम लोग जागे तो पता चला कि डाक बंगला और थोड़ी-बहुत दीनापुर की आबादी जिस टीले पर थी। वह टीला एक टापू बना हुआ है। चारों ओर पानी-ही-पानी भरा हुआ था और हमारे लिए यात्रा करना सम्भव नहीं रहा था।

पद्मिनी शहर में रहने वाली बच्ची—उसने ऐसे दृश्य कभी देखे नहीं थे।''' वह चारों ओर पानी-ही-पानी देखकर इतनी खुशी हुई कि इधर-उधर भागने-दौड़ने लगी—कागज की नाव बनाकर पानी में फेंकने लगी''' और मैं थोड़ी देर के लिए कहीं इधर-उधर हुआ तो वह बंगले के पास ही बने एक स्कूल की छत से पानी में गिरकर बह गई। बोलते-बोलते सेठ साहब की आवाज भर्रा गई
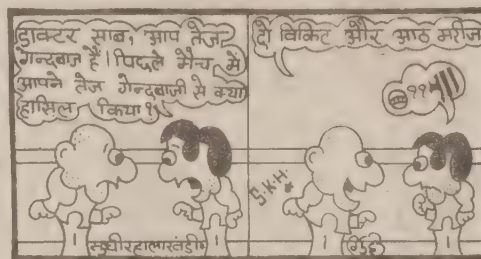
और आंखें भीग गईं। वह फिर बोलने लगे—'मैंने चारों ओर जाल फिंकवाए और कई गोताखोरों को दूर-दूर तक दौड़ाया लेकिन मेरी पद्मिनी का कोई पता नहीं चला और मैं सुबह से शाम तक डाक बंगला के पास स्कूल की उसी छत पर पागलों की तरह बैठा रहा, जिससे पद्मिनी गिरी थी—और शाम को मैंने तुम्हें देखा''' तुम एक पेड़ के गुद्दे में उलझी हुई थीं और वह गुद्दा स्कूल की छत से लगकर पानी में बहता हुआ ठीक उसी स्थान पर आकर अटक गया था जिस स्थान से मेरी पद्मिनी गिरी थी।

तो बेटी''' मैंने तुम्हें वहां से निकाल लिया और शहर ले आया''' शहर में तुम पूरे एक हफ्ते तक अस्पताल में बेहोश पड़ी रहीं और इस बीच में शोभना कम से कम दस बार तुम्हें देखने आई होगी''' क्योंकि मैंने शोभना को बताया था कि पद्मिनी पानी में गिर पड़ी थी लेकिन भगवान् ने उसे बचा लिया और अब वह अस्पताल में है'''।'

मुन्नी आश्चर्य से आंखें फाड़े हुए सेठ साहब की बातें सुन रही थी—सेठ साहब ने एक ठन्डी सांस ली और बोले—

'बेटी''' शायद तुम्हारे भाग्य में शोभना के दर्द की दवा बनना लिखा हुआ था''' अब अगर तुम पद्मिनी बनकर शोभना को बेटी की कमी अनुभव न होने दोगी तो समझ लो शोभना को नया जीवन मिल जाएगा—वरना अगर शोभना को किसी दिन भी पता चल गया कि उसकी बेटी मर चुकी है तो सच मानो बेटी वह फिर जिंदा नहीं रहेगी—एक क्षण भी जिंदा नहीं रहेगी।

बोलते-बोलते सेठ की आवाज फिर भर्रा गई और मुन्नी बेचैन होकर बोल उठी—'नहीं' नहीं बाबूजी''' उन्हें कभी पता नहीं चलेगा। 'बेटी''' मेरी बच्ची?' सेठ साहब ने मुन्नी को जोर से लिपटा लिया।

कार कोठी के पोर्टिको में जाकर रुकी और ड्राइवर ने गाड़ी से उतर कर दरवाजा खोला। सेठ साहब मुन्नी को लेकर कार से उतरे और बरामदे की ओर बढ़े ही थे कि छड़ी की खटखट की आवाज आई, साथ ही कदमों की चाप भी सुनायी दी''' और फिर''' बरामदे में शोभना आती हुई दिखाई दीं''' एक हाथ से छड़ी टेकतीं और दूसरा हाथ आगे फैलाकर तेज-तेज पलकें झपकाती बाहर आगे बढ़ी ही थीं कि सेठ साहब ने जल्दी से हाथ उठाकर जोर से कहा—

'ठहरो शोभना''' आगे मत बढ़ना''' गिर पड़ोगी।'

शोभना ठिठककर रुक गई और बेचैनी से बोली—

'आप आ गए नाथ''' आप आ गए''' अब मेरी बच्ची की तबीयत कैसी है?'

'तुम्हारी बच्ची बिल्कुल ठीक है शोभना, ''' उसे कोई खतरा नहीं।'

'सच'''!' शोभना का चेहरा अचानक खुशी से खिल उठा।'

मुन्नी ध्यान से शोभना को देख जा रही थी''' उसकी ज्योति हीन आंखों से झलकती हुई ममता के अलौकिक प्रकाश को देखकर मुन्नी को ऐसे अनुभव हुआ जैसे उसकी अपनी मां रामदेई उसके सामने खड़ी हो ... मुन्नी का पूरा बदन कांप उठा। शोभना कह रही थीं—

'मेरी बच्ची अगर अच्छी हो गई थी तो उसे आप घर क्यों नहीं ले आए नाथ?'

शेष आगामी अंक में

पायलट की बीवी घड़ी-साज की बीवी

प्लम्बर की बीवी गुंडे की बीवी फास्ट-बाउलर की बीवी
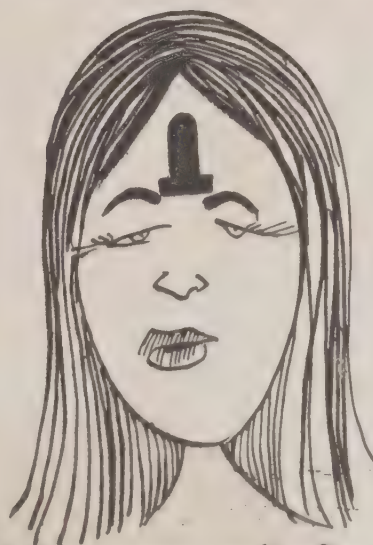
ड्राईवर की बीवी पैट्रोल पम्प वाले की बीवी मन्त्री की बीवी

काका हाथरसी लिखित अप्रकाशित पुस्तक 'भोगा एण्ड योगा' का एक अंश

७, नैनासन

विधि

यह आसन मुख्य रूप से महिलाओं के लिए है। इसमें नैनों की पुतलियों के संचालन द्वारा भिन्न-भिन्न भावों का अभ्यास किया जाता है।

पालथी मारकर सीधी बैठ जाइए। दोनों हाथों को ढीला छोड़कर गोदी में रख लीजिए। मुख पर एक इंच मुस्कान लाइए। दोनों पुतलियों को बाएं से दाएं एवं दाएं से बाएँ चलाइए। गर्दन न मुड़ने पाए। इसी प्रकार पुतलियों को क्रमशः नीचे से ऊपर की ओर और ऊपर से नीचे लाना है। इस आसन की परम सिद्धि तब मानी जाएगी जब साधिका एक पुतली को स्थिर रखकर दूसरी में उपरोक्त गति संचालन ला सके। पुतली संचालन के समय चेहरे पर क्रमशः क्रोध, घृणा, उपेक्षा, ईर्ष्या, प्रेम, श्रद्धा, कामातुरता एवं समर्पण के भाव लाने हैं। पुतलियां मनोभावों के साथ वैसे ही भाव अपना लेंगी।

लाभ

आड़े-तिरछे देखकर, मृगनैनी के नैन,
बड़े-बड़े योगी-यती, हो जाते बेचैन।
हो जाते बेचैन, चोट नैनों की खाएं,
'कैबरे' डांसर नैन मारकर नोट कमाएं।
नयन-चपलता आभूषण है, सुमुखि नारि का.
गजब ढा रहीं एयर होस्टेस, फिल्म तारिका।
भरी होय मनहूसी, जिस पति की नसनस में,
नैनासन से पत्नी, कर सकती है वश में।

८. सैनासन

विधि

यह आसन भृकुटि-संचालन पर आधारित है। नैनासन की भांति पालथी मारकर बैठ जाइए। बाईं भृकुटि स्थिर रखकर दाईं भृकुटि को ऊपर खींचिए और कुछ क्षण के लिए स्थिर रहिए। पुनः यथास्थान लाकर अब बाईं भृकुटि उठाइए। प्रारम्भ में एक भृकुटि उठाने पर दूसरी भृकुटि भी अपने आप उठेगी, किन्तु अभ्यास द्वारा आप उसका उठना रोक सकती हैं। अब भृकुटियों के दाएं-बाएं संचालन में क्रमशः तेजी लाइए, फिर आंखें बंद करके विश्राम कीजिए। पुनः दो-तीन बार इस क्रिया को दुहराइए। मनोभाव भी नैनासन की भांति बदलने से आसन में सफलता मिलेगी।
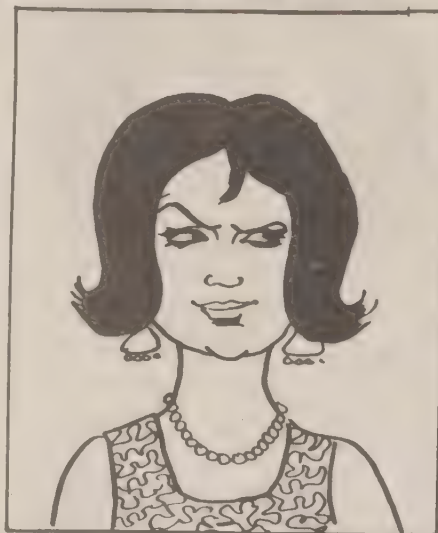
लाभ

बिना धनुष के जिस तरह, प्राणहीन हैं बान,
बिना भृकुटि के नेत्र भी, कर न सकें संधान।
कर न सकें संधान, सुनयना नैन-फड़क्को,
उनसे आगे बढ़ें सुन्दरी, सैन-मटक्को।
सैन चलाकर सखी, श्याम पर करतीं काबू,
सैनासन वाली बीबी से डरते बाबू।
राग गान में तान लगाकर सैन चलाए,
तान-सैन के द्वारा, तानसैन कहलाए।

९. नकलासन

विधि

इस आसन के कई प्रकार हैं। जैसे हथेली प्रधान, बांह प्रधान, जंघा प्रधान, शर्ट प्रधान पेंट प्रधान आदि। ये सभी आसन मेज कुर्सी की सहायता से किए जाएंगे। सर्वप्रथम कुर्सी पर बैठ जाइए. अपनी
नियों को मेज पर टिका दीजिए।
चारों ओर घुमाकर और अपने चेहरे
भाव लाकर एक काल्पनिक चाकू मे
दाईं ओर गाढ़ने का उपक्रम कीजिए
अंग या वस्त्र को प्रधान मानकर
आसन करना है, इस पर अपना
केन्द्रित कीजिए। और मुक्तभाव से
नजरें इस अंग पर टिका कर कोई
पढ़ने का उपक्रम कीजिए। फिर उस
हुए मैटर को देखकर मेज पर रखी
(निक कापी पर लिखने का उपक्रम की
पुनः कल्पना कीजिए कि निरीक्षक अ
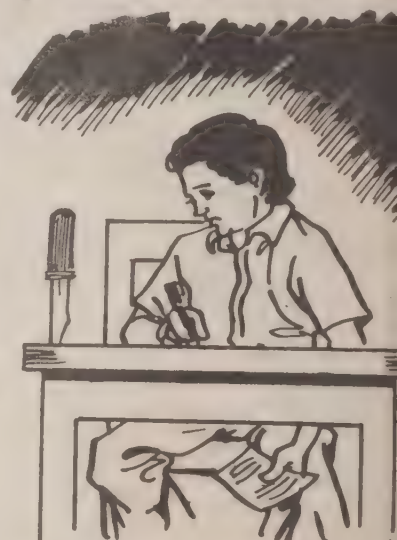
ओर देख रहा है, ऐसी स्थिति में सेन
की भयानक मुद्रा का सहारा लेते
काल्पनिक चाकू की मूठ कसकर
लीजिए। यह क्रम बारम्बार दोहराइए

लाभ

नकलासन का कर लिया, जिसने भी अभ
वह विद्यार्थी हो गया, बिना पढ़े ही पा
बिना पढ़े ही पास, नौकरी फौरन प
इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर बन जा
बिना अकल के, नकल साधना रहे अधू
सफल नकल के लिए अकल है बहुत जरू
दखलंदाजी करे, नकल में कोई नक
दादा टाइप छात्र दिखा देते हैं चक्क

क्रमश

आदिमानव
सुनाओ गंगाराम, आजकल क्या कर रहे हो ? सुना है कि इन्जीनियरिंग की डिग्री करने के बाद भी तुम्हें नौकरी नहीं मिली । पाषाण युग में इतनी बेकारी फैल जायेगी यह किसने सोचा था ।
आजकल बड़ी-बड़ी डिग्रियों वाले लोग जंगल में जड़ें खोद कर खाते रहते हैं । नौकरियां हैं कहाँ ? बड़े-बड़े पत्थर पर बैठे जो लोग हैं वहां तक एप्रोच होनी चाहिए । आज तू मेरी गुफा में चल ।
क्या कोई खास बात है तेरी गुफा में ? खैर चल कुछ देर गप्प शप्प हो जाये ।

प्यारे यह देख । मुझे नौकरी मिल गयी है । मेरी एपाइंटमेंट का शिलालेख आज सुबह ही मुझे मिला । अब दुखके दिन कट गये यार ।
वाह !

अंदर अंधेरे में शिला लेख ठीक तरह पढ़ नहीं पाया । कौन सी नौकरी है यह ?
टैक्नीकल काम है प्यारे । चट्टानसिंह एंड कम्पनी में मिली है नौकरी । बड़ी-बड़ी गुफाओं के मुंह बन्द करने वाले बड़े-बड़े पत्थरों की सप्लाई करती है कम्पनी । मेरी नौकरी क्रेन आपरेटर की है । कल काम पर मुझे देख लियो ।

इंजीनियरिंग तो मैंने किसी और विषय पर किया था लेकिन क्या करें ! यही क्रेन ओपरेटर का काम ही सही ।
भई मुझे तो तेरी नौकरी अच्छी लगी । महीने में आठ दस हिरण तो मिल ही जायेंगे तनखवाह में । लेकिन प्यारे जरा चौकसी से काम करियो । क्रेन आपरेटरी काफी रिस्क का काम है । देना सोर कभी भी बिगड़ सकता है ।

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

जूडो एक ऐसी कला है जिसके दांव-पेच का जरा-सा इशारा भी विरोधी को मिल जाए कि वह चारों खाने चित्त ही होता है। इन दांव-पेचों का प्रयोग करने के लिए ताकत की नहीं, बल्कि एक सही ढंग और फूर्ती की आवश्यकता होती है। जूडो सिखाने का सबसे बड़ा संस्थान जापान में कोडोकन है जो टोकियो में है।

जूडो

जूडो के अभ्यास के लिए जमीन पर गद्दे या मोटी गुदगुदी चटाइयों का उपयोग किया जाता है तथा गद्दे या चटाइयों के आस-पास का भाग कंधे जितनी ऊंची मोटे कपड़े की कनातों से वह क्षेत्र घिरा रहता है। कनातें जिन खंभों से बंधी रहती हैं, उन्हें भी अच्छी तरह मोटे कपड़े या गद्दी से लपेट दिया जाता है ताकि खंभों में गड़ी कीलों से खिलाड़ियों को चोट न लग जाए।

खिलाड़ी शरीर पर मोटे तथा मजबूत कपड़े का ढीला कोट तथा ढीला पाजामा पहनता है। पाजामा चौड़ी मोहरी का होता है तथा घुटनों से थोड़ा ही नीचा होता है। कमर में चौड़ी पट्टी का मजबूत बेल्ट कसकर बांधा जाता है। यह सारी पोशाक मोटे कपड़े की तथा मजबूत इसलिए पहनी जाती है कि जूडो के बहुत से दांव-पेच कपड़ों तथा बेल्ट को पकड़ कर लगाए जाते हैं।

जूडो के अलग-अलग ग्रेड भी होते हैं। जिस तरह हम शिक्षा के क्षेत्र में कहते हैं कि फलां व्यक्ति इण्टर पास है और फलां बी० ए०। इसी तरह जूडो के भी दो ग्रेड हैं। पहला 'कियू' कहलाता है तथा दूसरे ग्रेड को 'डान' कहते हैं। कियू की पाँच श्रेणियाँ होती हैं—प्रथम कियू, द्वितीय कियू··· तथा पंचम कियू। इसी प्रकार 'डान' की भी दस श्रेणियां होती हैं. जैसे प्रथम डान, द्वितीय डान···दशम डान। जो व्यक्ति दशम डान पास कर जाता है वह जूडो का अच्छा मास्टर बन जाता है। पंचम कियू का मतलब होता है प्रथम डान उत्तीर्ण यानी पंचम कियू पास करने के बाद ही शिक्षार्थी को प्रथम डान में प्रवेश मिलता है। श्रेणियों के साथ बेल्ट का रंग भी बदलता रहता है यानि बेल्ट का रंग जूडो में पास की श्रेणी को सम्बोधित करता है। एक तरह से इसे उपाधि चिन्ह भी कहा जा सकता है। जैसे सफेद बेल्ट कियू और डान के प्रथम वर्ष के शिक्षार्थी लगाते हैं। कत्थई रंग का बेल्ट प्रथम से तृतीय कियू के शिक्षार्थी इस्तेमाल कर सकते हैं। काला बेल्ट पंचम डान तक सीखा हुआ शिक्षार्थी पहन सकता है। छठे डान से नवम डान तक सीखा हुआ शिक्षार्थी सफेद और लाल रंग का बेल्ट लगाता है। तथा लाल रंग का बेल्ट दशम डान पास या इससे भी ऊपर के ग्रेड प्राप्त करने वाला व्यक्ति पहनता है। इसका मतलब है कि बेल्ट का रंग देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिक्षार्थी का जूडो ग्रेड क्या है।

जूडो में शिष्टाचार

जूडो चूंकि जापान का एक प्रतिष्ठित खेल है अतः जूडो के खिलाड़ी खेलते समय

कुछ खेल सम्बन्धी शिष्टाचारों का पालन करते हैं। शिष्टाचार के मामले में जूडो शिक्षक बहुत ही कठोर व्यवहार बरतते हैं।

जिस प्रकार पश्चिम देशों में कुश्ती से पहले या बाक्सिंग खेलने से पहले खिलाड़ियों के खेल से पहले हाथ मिलाने की पद्धति है। उसी तरह जूडो के खिलाड़ी भी जापानी तरीके से लड़ने से पहले एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। उसके बाद एक दूसरे के सामने जूडो खेलने से पहले ठीक ढंग से खड़े होने की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं। फिर खिलाड़ी अपने दायें हाथ से दूसरे खिलाड़ी की भुजा के पास कोट का कपड़ा कस कर पकड़ लेता है और बायें हाथ से गिरेबान थाम लेता है। इसी प्रकार दूसरा खिलाड़ी भी करता है और फिर संकेत मिलते ही दोनो खिलाड़ी एक-दूसरे पर जोर आजमाने लगते हैं। इस तरह जूडो खेल का आरम्भ होता है।

खिलाडी आपस में तब तक लड़ते रहते हैं जब तक कोई एक खिलाड़ी हार मानकर हार की स्वीकारात्मक घोषणा नहीं कर देता। जो खिलाड़ी हार स्वीकार कर लेता है वह ऊंचे हाथ उठा कर कहता है—'मायना' यानी 'मैं हार स्वीकार करता हूं।'

जूडो के कुछ दांव बहुत ही खतरनाक होते हैं। जब कोई खिलाड़ी उन दांवों में फंस कर बोल नहीं पाता तो वह हार स्वीकार करने के लिए दूसरे खिलाड़ी की जैकेट को थपथपाता है जिससे दूसरा खिलाड़ी अपनी पकड़ ढीली कर देता है।

जूडो का वास्तविक खेल तो बहुत ही कलापूर्ण और शिष्टाचार से युक्त है तथा जापानी ढंग की पोशाक पहन कर ही इसे खेला जाता है क्योंकि पोशाक को पकड़ कर भी जूडो के बहुत से महत्वपूर्ण दांव लगाए जाते हैं जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं।

विषय की दृष्टि से जूडो के बारे में इतना ही परिचय देना पर्याप्त है। अब हम जूडो के आत्मरक्षा की दृष्टि से काम में आने वाले कुछ उपयोगी दांव-पेचों के बारे में जानकारी देंगे।

पहला दांव

यदि कोई शत्रु आकर आपके दोनों हाथ कस कर पकड़ लेता है और आप हाथ छुड़ाने में असफल हैं तो अपनी भुजाओं को कंधों की तरफ फैलाते हुए उठाने की कोशिश कीजिए। विरोधी का ध्यान आपकी भुजाओं को फैलने से रोकने की ओर लगा रहेगा। तब आप मौका पाकर अपने घुटने का प्रहार उसके पेट पर कर दीजिए। शत्रु तिल-मिला कर आपको छोड़ देगा और पेट थाम कर बैठ जाएगा।

अनमोल लतीफे

● एक गांव में क्रिकेट मैच हो रहा था। एक टीम के कप्तान ने अपने एक खिलाड़ी को मैच से पहले पांच रुपये दिये और कहा कि हमें यह मैच किसी तरह भी जीतना है। पांच रुपये का प्रसाद चढ़ा आओ कहीं। कप्तान धार्मिक ख्यालों का था।' कुछ देर के बाद वह खिलाड़ी लौट आया। उसके हाथ खाली थे। उसके पास मंदिर का प्रसाद खिलाड़ियों में बांटने के लिए होना चाहिए था। कप्तान ने पूछा, 'चढ़ा आये प्रसाद ? कहाँ है प्रसाद ?'

खिलाड़ी बोला, 'तुमने ही तो कहा था कि हमें यह मैच किसी तरह भी जीतना है। इसलिए मैंने वह पांच रुपये अम्पायर को दे दिये।'

● कर्नाटक की रणजी टीम ने दिल्ली के विरुद्ध फाइनल में लगभग दो दर्जन कैंच छोड़ दिये। अन्तिम दिन लंच ब्रेक के समय कर्नाटक की टीम के मैनेजर ने समाचार सुनाया कि कर्नाटक टीम के खिलाड़ियों की बीबियां अपने प्रेमियों के साथ भाग गयी हैं, सभी खिलाड़ी सिर पकड़ कर बैठ गये।

बाद में पता लगा कि खबर मनगढ़न्त है। कर्नाटक के कप्तान विश्वनाथ ने मैनेजर से पूछा कि उनकी टीम को ऐसी गलत बात क्यों बतायी गयी तो मैनेजर ने कहा, 'आप लोगों ने कैंच तो एक भी नहीं पकड़ा। इसी लिये हमने ऐसी खबर सुनाई जिससे आपको सिर पकड़ना पड़ा ताकि लोग यह तो न कहें कि कर्नाटक के खिलाड़ी कुछ भी नहीं पकड़ सके।'

● एक लड़की को फैशन का बहुत शौक था! रोज नये-नये कपड़े बनवाती। एक दिन वह दौड़ी-दौड़ी पिता के पास गई और बोली, 'डैडी, किसी ने अलमारियों से मेरे कपड़े निकाल एक कोने में ढेर लगा रखे हैं।'

पिता यह सुनते ही बाहर दौड़े और मकान का चक्कर लगा कर आये और बोले, 'मैं यह देखने आया था कि एक कोने में तुम्हारे सारे कपड़ों का ढेर लगने के कारण उस तरफ से हमारा मकान नीचे तो नहीं धंस गया।'

● एक रैस्टोरेंट में एक टेबल पर एक आदमी बैठा था उसके सामने वाली कुर्सी पर एक शेर बैठा था। वेटर आया! उस आदमी ने अपने खाने का आर्डर दिया। जाते-जाते वेटर ने पूछा, 'साहब, आपका शेर कुछ नहीं खायेगा ?' वह आदमी तपाक से बोला, 'बेवकूफ, अगर शेर भूखा होता तो मैं इसके सामने बैठा नजर आता तुझे ?'

५ रुपये जीतिये

एक हवाई जहाज में तीन व्यक्ति सवार थे। एक स्कूल का बूढ़ा अध्यापक, दूसरा एक विद्यार्थी स्काऊट और तीसरा एक नेता था। अचानक जहाज खराब हो गया। पायलट ने सूचना दी, 'जहाज में आग लगने वाली है। बचने का एकमात्र उपाय पैराशूट द्वारा कूदना है!' मगर अफसोस कि हमारे पास कुल तीन पैराशूट हैं।'

पायलट ने एक पैराशूट अपनी पीठ पर कसा और यह कहता कूद गया, 'भाई मेरा बचना तो जरूरी है। मुझे एयरपोर्ट अपने कार्यालय में दुर्घटना की सूचना देनी है।'

नेता जी बोले, 'मेरा बचना तो सबसे ज्यादा जरूरी है। देश का सारा भविष्य मेरे ऊपर निर्भर करता है। मेरे बिना देश तबाह हो जायेगा। इस समय मैं ही एक वह योग्य और बुद्धिमान व्यक्ति हूं जो देश को संकट से निकाल सकता है।' नेता जी भी कूद गये।

बूढ़े अध्यापक ने स्काऊट से कहा, 'बेटा मैं तो बूढ़ा हो गया हूं। मेरा अंत वैसे भी निकट है! तुम्हारी सारी जिन्दगी सामने पड़ी है। तुम तीसरा पैराशूट लेकर कूद जाओ।'

स्काऊट बोला, 'मास्टर जी, आप चिन्ता न करें! हम दोनों कूदेंगे! हमारे पास दो पैराशूट हैं। नेता जी ने जिसे पैराशूट समझ कर पहन लिया था वह वास्तव में मेरा स्काऊट पिट्ठू बैग था।'

सारांश——

अन्तिम तिथि 20-12-७९

नेता प्राथमिक अक्षर ज्ञान

देश में जो कुछ हो रहा है वह आपके सामने है। हमने सबकी भलाई के लिये नेता प्राथमिक अक्षर ज्ञान तैयार कराई है। भारत का हर तीसरा नागरिक राजनीतिज्ञ है। इसलिये अक्षर ज्ञान हमने लोगों की इसी रुचि को ध्यान में रखकर तैयार की है। पहली की यह किताब प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के लिये तो बहुत ही उपयोगी होगी। पाठों के विषय राजनीति से लथ-पथ हैं। आशा है हमारी यह प्राथमिक ज्ञान माला की पुस्तक सबको पसन्द आयेगी और सरकार इसे स्कूलों में लगायेगी। अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ पॉलिटिकल एजुकेशन भी मिलेगी। हमारी प्राथमिक पुस्तक के कुछ पाठों के नमूने पेश हैं।

यह कुर्सी है।
इसकी चार टांगें होती हैं।
नेताओं की नजर इस पर लगी रहती है
यह सबको लड़ाती है।
इसके लिये छीना-झपटी होती है।
एक-दूसरे की टांग खींची जाती है
यही सब झगड़ों की जड़ है!
इसको तोड़ दो!

अभ्यास—अपनी स्लेट पर १०० बार कुर्सी-कुर्सी लिख

यह माइक है।
माइक नेता के लिये ऐसा ही है.
जैसे अंधे के लिये लाठी।
माइक बोलता है.
जनता सुनती है!
यह गरीबी हटाता है।
बेकारी दूर करता है।
भ्रष्टाचार मिटाता है।
नारे लगवाता है।
माइक बकवास है।

अभ्यास—शीशे के सामने खड़े होकर तब तक बकवास करो जब तक आपकी सांस से शीशा धुंधला न हो जाये!

यह फीता है!
इसको मंत्री काटता है।
चांदी की कैंची से काटता है।
कैंची प्लेट में पड़ी है।
प्लेट एक हसीना पकड़ती है

हसीना के बाल बाब
ब्लाउज लोकट है।
नजर तिरछी है।
मंत्री घायल हो गये है
अस्पताल का उद्घाट
गर

अभ्यास—
एक फीता लेकर कैंची से उसके बीस टुकड़े करें! टुकड़ों को पतंग की पूंछ में जोड़िये! छत पर जाकर पतंग उड़ाइये।

यह थैली है।
इसमें ब्लैक मनी है।
बहुत मोटी रकम है।
नेताजी को पेश की गयी है।
पेश करने वाले कौन हैं?
ब्लैकिये, स्मगलर और टैक्स चोर।
अखबार छपा है।
एक और घोटाला।
एक और जाँच आयोग।
यह सब नाटक है।
नाटक जनता के मनोरंजन का साधन है।

अभ्यास—आज का अखबार लेकर उसे सिलबट्टे पर पीसिये। फिर मिक्सी में डाल घोट-घोट कर उसका घोटाला बनायें। लेई सी बन जाये तो चेहरे पर लेप करें। इससे रंग निखरता है।

यह चमचा है।
मिनिस्टर चमचा पालता है।
चमचा हाथ जोड़कर खड़ा रहता है!
इसे चापलूसी आती है!
यह कान भरता है!
मंत्री जी इसकी मदद से दाव-पेच लड़ाते हैं!
चमचा चालू आदमी है।
चमचा मंत्री के सारे भेद जानता है।
चमचा दाईं है।
मिनिस्टर के पेट का हाल जानता है।

अभ्यास—चमचागीरी की कला का प्रयोग कर अपने डैडी से पैसे ढीले करवाइये और जाकर रात का आखिरी शो देखिये।

देश एक पेड़ है।
पेड़ बगीचे में होते हैं।
उल्लू पेड़ पर बैठते हैं।
एक उल्लू बगीचा उजाड़ सकता है।
इस बगीचे का हाल बुरा है।
हर डाल पर उल्लू बैठे हैं।
हजारों उल्लू हैं।
देश का क्या होगा ?
भ्यास—कमरे की बत्ती बुझा कर कोयले से दीवार पर पचास बार उल्लू शब्द लिखें !
यह वोट है।
वोट में बड़ी ताकत है।
यह नेताओं को बना बिगाड़ सकता है।
वोट कीमती है।
इसके लिये नोट भी मिलते हैं।
अपने वोट का ठीक इस्तेमाल करें।
केवल ईमानदार उम्मीदवार को वोट दें।
सब उम्मीदवार चोर हैं।
किसी को वोट मत दो।
BALLOT BOX
अभ्यास—अपने पास की चुनाव सभा में जाकर पत्थर फेंकिये। कम से कम आठ-दस के सिर फूटने चाहियें।
त है।
अदालत कहते हैं
मे चल रहे हैं!
जाओ।
जगह है
चल रहा है।
कुछ ठप्प है
में।
अभ्यास—आप जिस पोज में हैं वहीं फ्रीज हो जायें। पांच मिनट सांस लेके इसी तरह फ्रीज रहिये।
यह दलबदलू है।
दलबदलू सदा सुहागन होता है।
यह थाली का बैंगन है।
बैंगन का भर्ता बनता है।
भर्ता पौष्टिक भोजन है।
इसे खाकर प्रजातन्त्र की सेहत बनती है।
अभ्यास—सुबह-सुबह उठ कर किसी दलबदलू नेता की कोठी तक दौड़ लगाइये! आपकी भी सेहत बनेगी। स्वस्थ प्रजातंत्र के लिये स्वस्थ मत-दाता चाहिये।
यह चुनाव घोषणा पत्र है।
इसमें वादे हैं।
कभी पूरे नहीं होंगे।
आप क्या बिगाड़ लेंगे ?
भ्यास—सत्ताधारी पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र लेकर उस पर सरकारी फार्म का शहद डाल कर चाटिये !
भाइयों और बहनों,
यह टोपी है।
यह साधारण टोपी नहीं है।
जादुई टोपी है!
इसे पहनते ही आदमी नेता बन जाता है। इसका रंग सफेद है।
झूठ भी सफेद होता है।
पहनने वाले का खून भी सफेद हो जाता है।
जयहिन्द !
अभ्यास—सफेद कागज पर काला-काला लिखकर पूरा कागज काला करें।
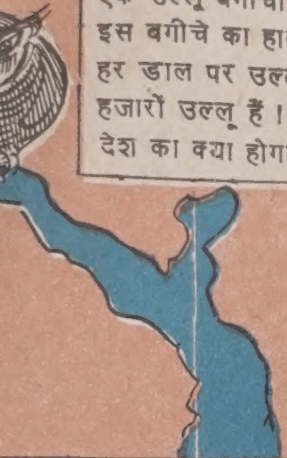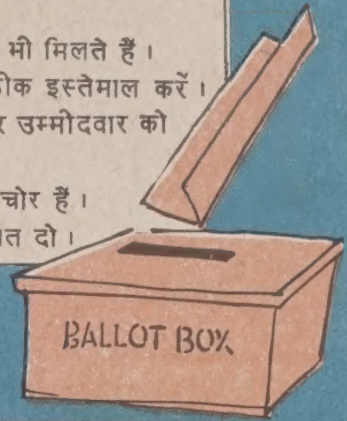
चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : गरीब चंद जी, सुना है, आप बड़े तीस मारखां हैं।

उ० : जी नहीं—मैं तो केवल उनतीस मार खां हूँ। तीस मार खां तो राजनारायण हैं !

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : आप सिल-बिल पिलपिल को अच्छी सलाह देते हैं पर वे हमेशा ही आपका मजाक उड़ाते रहते हैं ?

उ० : जमाना अच्छी सलाह देने का नहीं है। आजकल वही गाइड कद्र का पात्र बनता है जो उल्टे रास्ते पर डालता है। उल्टी दुनिया में सुल्टी बात करने वाले का मजाक तो उड़ेगा ही।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जीन्द, हरियाणा : आप की मोहर के ऊपर इतनी पुरानी तिथि क्यों है ?

उ० : मैं पाठकों के पत्रों को बांसमती चावल की बोरी में रखता हूं। बांसमती जितनी पुरानी होगी उतनी ही बढ़िया होगी।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : यूरोपीय देश में बुढ़े-बुढ़िया भी बच्चों की तरह पिकनिक मनाते हैं। अगर यहां ऐसा कोई करे तो लोग उससे हँसेंगे और लानतें भेजेंगे ?

उ० : यहां कोई दूसरे को खुशी मनाता नहीं देख सकता ! बूढ़ों को खुशी मनाते देख तो लोग और ज्यादा जलते हैं।

मुकेश कुमार गुप्ता—(फव्वारा) दिल्ली : जब शीशा टूट जाता है तो फेंक देते हैं। लेकिन दिल टूट जाता है तो क्या करते हैं ?

उ० : टूटे दिल वाले को ही उठाकर फेंक दिया जाता है।

सुरेन्द्र खुराना 'काका'—पानीपत (हरियाणा) : "प्रेमिका कब बूढ़ी नजर आने लगती है ?"

उ० : जब दिल बूढ़ा हो जाता है।

रविभाटिया—शंकर रोड मार्किट : गरीबचन्द जी. मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। आप किस जगह मिलेंगे ?

उ० : मैंने राजनारायण को अपना प्राइवेट सैक्रेटरी नियुक्त किया है। आप उनसे मिल कर एपाइंटमेंट फिक्स कर लें।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : गरीबचन्द जी, आजीवन क्वारा रहने की कोई सरल सी तरकीब बना दीजिए ?

उ० : हिजड़ों की टोली में भर्ती हो जाइये।

खालीक हुसैन—खंडवा : गरीबचन्द जी, मेरी किराने की दुकान तीन पुलिया के पास है। मेरी दुकान में एक से एक अच्छा सामान है ! क्या आप आने की कृपा करोगे।

उ० : आपको अब तक पता नहीं लगा ? मैं रोज रात को आपकी दुकान में सजे माल का निरीक्षण करने आता हूँ।

आज मैंने तुम्हारी इज्जत बचा ली, पड़ोस वाली सीमा की माँ ने अपने लिए सौ रूपये की साड़ी खरीदी तो मैंने तीन सौ रूपये वाली साड़ी खरीद ली !

मो० जहाँगीर—मैन रोड रांची, बिहार : गरीब चन्द जी, आपकी पूंछ की लम्बाई चौड़ाई कितनी है ? नाप कर बताए।

उ० : अभी देश के सारे फीते बेकारों के पास हैं जिससे वह सड़कें नाप रहे हैं।

अशोक जौहर—देहरादून : गरीबचंद जी, आपकी बिरादरी वालों ने मेरी प्रेमिका के पत्र कुतर डाले, बताइए क्या करूं ?

उ० : हम हर मीठी चीज को कुतर जाते हैं आपकी प्रेमिका के पत्रों में जरूर मीठी-मीठी बातें लिखी होंगी। आगे से अपनी प्रेमिका के पत्रों को बिस्कुट के टीन में बन्द रखिए।

सुबोध गर्ग—(राज०) : गरीबचन्दजी, पिछले सप्ताह पता नही कैसे मेरी बिल्ली रानी ने आपकी शक्ल 'दीवाना' में देख ली, तब से उसने भूख-हड़ताल कर रखी है कि जब तक वह आपको अपने पेट का दर्शन नहीं करा देती है, तब तक दिन-रात खाना ही खाती रहेगी, आप जल्दी हमारे घर पधारियेगा वरना मेरा दीवाला निकल जाएगा।

उ० : अपनी बिल्ली को चिल्ली की फोटो दिखाइये। वह आराम बड़ी चीज है कहकर सो जायेगी।

पवन कुमार कटारिया—नई दिल्ली : गरीब चन्द जी, आप अपनी जाति वालों को परिवार नियोजन के फायदे क्यों नही बताते ? क्या बताने का कष्ट करेंगे ?

उ० : अगर मैं ऐसा करूं तो दूसरे चूहे मुझे चूहों का संजय गांधी कहना शुरू कर देंगे। आजकल भलाई के बदले बुराई मिलती है। संजय गांधी ने देश का भला करने के लिए नसबन्दी शुरू की नतीजा आपने देख ही लिया।

अशोकजौहर 'गगन'—देहरादून : आप अपना खाली समय किस प्रकार बरबाद करते हैं ?

उ० : आपके पत्रों के उत्तर देकर।

चन्द्रभान अनाड़ी'—जबलपुर : आप अगले जन्म में क्या बनना पसंद करेंगे ?

उ० : अगले जन्म में मैं उल्लू का चर्खा बनना चाहता हूँ ताकि गांधी जी की दुहाई देते-देते प्रधान मंत्री बन जाऊं।

केवल प्रकाश अरोड़ा—काशीपुर : जिन लोगों को प्यार मौहब्बत की कतई समझ नहीं होती वे भी फिल्में देखकर सारी बात जान जाते हैं, जिनको नहीं जानना चाहिए ?

उ० : लगता है आपको खुद मुहब्बत की जानकारी नहीं है। समझ और मुहब्बत एक दूसरे के शत्रु हैं। मुहब्बत अंधे अनाड़ियों का खेल है। जिनका समझ से वास्ता पड़ा वह मुहब्बत से नाता तोड़ गये।

गरीबचन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२